ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 31 मई 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 31 मई 2015 से 06 जून 2015

ज्ये.शु. 13 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 58, अंक 22, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक साधारण अधिवेशन डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सबसे पहले सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने "ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना" मन्त्रों का पाठ किया। मन्त्री ब्रि. अशोक कुमार अदलखा ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने श्री बी एस बहल, श्री ओ पी नोटियाल एवं श्रीमती सरला गुप्ता के देहावसान पर एक मिनट का मौन धारणकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

पिछली साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि के पश्चात् आर्य समाज में होने वाली गतिविधियों की चर्चा की गई जिसमें प्रत्येक रविवार को समाज में होने वाले सत्संग की सफलता पर प्रकाश डाला गया।

मंत्री जी ने बताया आर्य समाज का 90वाँ वार्षिकोत्सव 28 नवम्बर 2014 तक समाज में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्रतिदिन सन्ध्या, हवन, भजन तथा विचारोत्तेजक प्रवचन हुए। विभिन्न प्राचार्यों (श्रीमती आई.पी. भाटिया, श्रीमती प्रेमलता गर्ग, श्रीमती चित्रा नाकरा, सुश्री वन्दना कपूर) ने सभासदों को संबोधित किया। हवन के बाद सुन्दर भजन तथा तत्पश्चात् छात्रों द्वारा ज्ञानवर्धक विषयों पर नुक्कड़ नाटक (चिड़िया दा चम्बा, रक्तदान एवं पर्यावरण प्रस्तुत किए गए। डॉ. महेश वेदालंकार ने गीता सन्देश पर ज्ञानवर्धक प्रवचन दिया।

तत्पश्चात् पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। इसके लिए सर्वसम्मति से श्री एस के शर्मा जी, डायरेक्टर, डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवं मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को निर्वाचन अधिकारी घोषित किया गया। चुनाव प्रक्रिया आरम्भ होने पर श्री अजय सहगल जी ने आर्य समाज (अनारकली) के प्रधान पद के लिए श्री पूनम सूरी जी का नाम प्रस्तावित किया और जे.पी. शूर, डायरेक्टर, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स ने अनुमोदित किया। प्रधान पद के लिए अन्य नाम का प्रस्ताव न होने पर सर्वसम्मति से श्री पूनम सूरी जी को आर्य समाज (अनारकली) का प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। सर्वसम्मति से आर्य समाज के अधिकारियों एवं अन्तरंग सभा के सदस्यों को निर्वाचित करने का अधिकार प्रधान श्री पूनम सूरी जी को दिया गया। प्रधान जी ने कार्यकारी प्रधान पद के लिए श्री अजय सूरी जी, उपप्रधान पद के लिए श्री एच एल भाटिया जी, मन्त्री पद के लिए श्री ब्रि. अशोक कुमार अदलखा जी, सहमन्त्री पद के लिए श्रीमती स्नेह मोहन जी, कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री रविन्द्र कुमार जी तथा पुस्तकालयाध्यक्ष पद के लिए श्रीमती चन्द्रप्रभा जी का नाम प्रस्तावित किया और कहा कि किसी को कोई अन्य नाम प्रस्तावित करना हो तो स्वागत है। किसी अन्य नाम का प्रस्ताव न होने पर सर्वसम्मति से उन महानुभावों को चयनित घोषित किया गया।

प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने आर्य समाज (अनारकली) के अन्तरंग सदस्यों की सूची प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के जो 15 प्रतिनिधि भेजे जाते हैं उनका भी चुनाव हुआ।

श्री एस के शर्मा ने चुनाव शान्तिपूर्वक करवाने के लिए सभी माननीय सदस्यों को बधाई दी।

मान्य प्रधान जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए वर्ष 2014–15 में आर्य समाज में हुए सभी कार्यक्रमों की सफलता पर सभी अधिकारियों एवं कार्यकताओं को बधाई दी तथा उनके सक्रिय योगदान की प्रशंसा की। सम्बोधन में प्रधान जी निम्न सुझाव दिये:–

1. प्रत्येक कार्यक्रम की सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया जाए।

2. वेद प्रचार कमेटी बने जो छोटी छोटी ज्ञानवर्धक पुस्तकें बाटें जिनके विषय गंभीर न हो ताकि वेद के प्रचार में सहायता मिले।

इन सुझावों के बाद प्रधान जी ने मनुष्य जीवन के दो महत्वपूर्ण गुणों दृढ़ संकल्प व आत्मविश्वास पर रोशनी डालते हुए कहा कि इन गुणों की नींव जब मानव जन्म लेता है तो उसके जात कर्म संस्कार के समय से ही पड़ जाती है। सभी को सुविचार बांटने चाहिएं ताकि सभी के पास सुविचारों का बैलेंस बढ़ सके। और समाज का उत्थान हो सके। मनुष्य अपने अन्दर का विचारों का बांटने का जज्बा रखें।

मन्त्री ब्रि. अदलखा जी ने प्रधान जी का आभार प्रकट किया और शान्ति पाठ के बाद अधिवेशन समाप्त हुआ।

ओ३म्

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार 31 मई, 2015 से 06 जून, 2015

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्व सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्व)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

महामन्त्र

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि गायत्री महामंत्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है।

जो लोग गायत्री का जाप करते हैं उनको ज्ञान, पात्र, प्रवास और राजगृह में अत्यंत श्रेष्ठ सिद्धि प्राप्त होती है। जो लोग सावित्री गुण–कीर्तन रूप में वेद ग्रहण करते हैं, उन्हें दुःख नहीं होता और वे परमगति को पाते हैं। वेद में कहीं भी विष्णु उपासना का विधान नहीं है, न ही विष्णु दीक्षा नित्य है। वैसे ही शिव की भी। गायत्री उपासना तो सनातन है। वेदों में इसी का प्रतिपादन किया है। गायत्री का आराध्य सब वेदों का सार रूप है। संध्याकाल में ब्रह्मदिक भी उसी का ध्यान सहित जप करते हैं। गायत्री मंत्र का सविता देवता है और विश्वामित्र ऋषि है। विश्वामित्र ऋषि ने राम और लक्ष्मण को उनके ब्रह्मचर्यकाल में इसी सावित्री–गायत्री का रहस्य समझाया था।

भगवान् कृष्ण गायत्री–जप करते थे–

'श्रीमद्भागवत' को महापुराण कहा जाता है। इसके दशम स्कन्ध के 70वें अध्याय में भगवान् की नित्यचर्या इत्यादि का वर्णन है। श्री शुकदेव जी परीक्षित को सुना रहे हैं: जब रात बीत जाती, सवेरा होने लगता तो फिर क्या होता? अब श्री शुकदेव जी कहते हैं–

भगवान् श्रीकृष्ण प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में उठ जाते और हाथ–मुँह धोकर अपने आत्मस्वरूप का ध्यान करने लगते। उस समय उनका रोम–रोम आनन्द से खिल उठता था। इसके बाद वे विधि–पूर्वक निर्मल और पवित्र जल में स्नान करते। फिर शुद्ध धोती पहनकर, दुपट्टा ओढ़कर बड़ी श्रद्धा एवं कुशलतापूर्वक आवश्यक नित्यकर्म, सन्ध्या–वन्दन आदि करते। इसके बाद हवन करते और मौन रहकर, गायत्री का जप करते। ये सब कर्म वे सूर्योदय से पहले–पहले कर लेते। (गायत्री–उपनिषद् की भूमिका से।)

गायत्री–जप का वर्णन इस अध्याय के छठे श्लोक में है, जो यह है–

अथाप्लुतोऽम्भस्यमले यथाविधि क्रियाकलापं परिधाय वाससी।
चकार सन्ध्योपगमादिसत्तमो हुतानलो ब्रह्म जजाप वाग्यतः।। 10.10.6.

'कल्याण'–गोरखपुर के 'भागवतांक' में इस श्लोक का यह अर्थ लिखा है– 'भगवान् ने विधिपूर्वक निर्मल और पवित्र जल में डुबकी लगाकर स्नान किया, फिर स्वच्छ धोती पहनकर, दुपट्टा ओढ़कर, बड़ी श्रद्धा और कुशलता के साथ सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म किया। तदनंतर वे हवन करके गायत्री का जाप करने लगे।' और भगवान् कृष्ण जी की इस 'आदर्श प्रातश्चर्या' के वर्णन के अन्त में यह लिखा है– हम लोगों को भी जगद्गुरु भगवान् के इस आदर्श के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए। और मेरा निवेदन है कि निस्सन्देह भगवान् कृष्ण की तरह ही नित्य गायत्री–जप करना सब कृष्ण–भक्तों का कर्त्तव्य है।

'बृहदारण्यकोपनिषद्' में गायत्री–

इस उपनिषद् के आठ अध्याय हैं और इनमें से पाँचवाँ अध्याय पूर्णब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करने का साधन बतलाने के लिए है। इसमें 15 ब्राह्मण हैं। इतने ब्राह्मण और किसी अध्याय में नहीं है, और इसी अध्याय में गायत्री–उपासना को सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है। यह 'ब्रहदारण्यक उपनिषद्' का पाँचवा अध्याय है। इससे पहले ब्राह्मण में **'ओं खं ब्रह्म'** मन्त्र की व्याख्या की गई है, और बतलाया है कि ओम् द्वारा ब्रह्म की उपासना कैसे होती है। इसका वर्णन आप इस पुस्तक में ओ३म् की व्याख्या के प्रकरण में पढ़ेंगे। दूसरे ब्राह्मण में उपासना की आधार–शिला इन्द्रियों के दमन करने, दया करने और दान देने का वर्णन है। तीसरे ब्राह्मण में यह प्रकट किया है कि उपासना तभी सफल होती है जब 'हृदय' से की जाय। चौथे ब्राह्मण में सत्य ब्रह्म की उपासना का रहस्य खोला गया है। इसी प्रकार अपने भक्त या साधन के प्राणों की रक्षा करने वाली गायत्री का बड़े विस्तार से ऋषि ने वर्णन किया है। वास्तव में यह सारा 5वाँ अध्याय गायत्री–उपासना ही के अर्पण किया गया है। पहले के 13 ब्राह्मण और अन्त का 15वाँ ब्राह्मण गायत्री द्वारा सारे

लोकों के वैभव प्राप्त करने और अन्त में प्रभु–दर्शन पाने का विधान करता है और 14वाँ ब्राह्मण तो गायत्री ही की महिमा–गायन करता है।

श्री शंकराचार्य जी और गायत्री–

'बृहरदारण्यकोपनिषद्' के इस चतुर्दश ब्राह्मण का भाष्य करते हुए श्री शंकराचार्य जी लिखते हैं–

सर्वछन्दसां हि गायत्री छन्दः प्रधानभूतम्, तत्प्रयोक्तृगायत्राणाद् गायत्रीति वक्ष्यति। न चान्येषां छन्दसां प्रयोक्तृप्राणत्राणसामर्थ्यम्; प्राणात्मभूता च सा सर्वछन्दसां चात्मा प्राणप्राणश्च क्षतत्राणात् क्षत्रमित्युक्तम्; प्राणश्च गायत्री; तस्मात् तदुपासनमेव विधित्स्यते।

–सम्पूर्ण छन्दों में गायत्री–छन्द ही प्रधानभूत है, उसका प्रयोग करने वाले, 'गय' (गाने वाले) का त्राण करने के कारण यह गायत्री है। अन्य छन्दों में अपने प्रयोक्ता के प्राणों की रक्षा करने का सामर्थ्य नहीं है। किन्तु यह प्राण की स्वरूपभूता है और प्राण सम्पूर्ण छन्दों की आत्मा है, तथा क्षत के त्राण करने के कारण प्राण–क्षत्र है– ऐसा ऊपर कहा जा चुका है। प्राण ही गायत्री है, इसलिए उसकी उपासना का ही विधान करना अभीष्ट है।

और फिर श्री शंकराचार्य जी चौथे मन्त्र के भाष्य में लिखते हैं– यह गायत्री अध्यात्म–शरीरस्थ प्राण में प्रतिष्ठित है। यह गायत्री प्राण है, इसलिए गायत्री जगत्–प्रतिष्ठित है। जिस प्राण में सम्पूर्ण देव एक हो जाते हैं तथा समस्त वेद, कर्म और फल भी जिसमें एक हो जाते हैं, वह गायत्री इस प्रकार प्राणरूप होने से जगत् की आत्मा है।

गायत्री को यहाँ जगत्–आत्मा बतला दिया गया है, और साथ ही श्री शंकराचार्य जी ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि और किसी मन्त्र में सामर्थ्य नहीं कि साधक के प्राणों की रक्षा कर सके। केवल गायत्री ही में ऐसी शक्ति है।

उपनिषद् के ऋषि का अनुभव–

अब इस उपनिषद् के ऋषि के हृदय और अनुभव की बात सुनिये। उपनिषदों के ऋषि जो कुछ लिखते हैं, वह पूरे निजी अनुभव से लिखते हैं। उनका ज्ञान केवल सुना नहीं होता, अपितु समाधि–अवस्था में जाकर साक्षात्कार किया हुआ होता है, अतएव उनका एक–एक शब्द पूरी श्रद्धा से स्वीकार करने और तदनुकूल आचरण करने योग्य होता है। 'बृहदारण्यकोपनिषद्' के ऋषि चतुर्दश ब्राह्मण के आरंभ ही में लिखते हैं–

भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षर७ ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु हैवास्या एतत् स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद।। 1।।

–भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ–ये आठ अक्षर हैं। आठ अक्षरवाला ही गायत्री का एक (प्रथम) पाद है; यह (भूमि आदि) ही इस गायत्री का प्रथम पाद है। इस प्रकार इसको पद को जो जानता है, वह इस त्रिलोक में जितना कुछ है उस सबको जीत लेता है ।। 1 ।।

इसके आगे दूसरे मन्त्र में ऋषि कहते हैं कि– 'ऋचः, यजूंषि, सामानि' ये आठ अक्षर हैं। आठ अक्षर वाला गायत्री का द्वितीय पाद है। यह (ऋक् आदि) ही इस गायत्री का द्वितीय पाद है। जो इस प्रकार इसके पद को जानता है, वह जितनी त्रयी विद्या है (अर्थात् त्रयी विद्या का जितना फल है) उस सभी को जीत लेता है ।। 2 ।।

और तीसरे मन्त्र में ऋषि गायत्री के तीसरे पाद का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

प्राण, अपान, व्यान– ये आठ अक्षर हैं। आठ अक्षरवाला ही गायत्री का तृतीय पाद है। यह प्राणादि ही इस गायत्री का तृतीय पाद है। जो गायत्री के इस पद को इस प्रकार जानता है, वह जितना यह प्राणि–समुदाय है, सबको जीत लेता है।

इस तीसरे मन्त्र में ऋषि ने गायत्री के एक चौथे पाद का वर्णन किया है और लिखा है कि और यह तपता (प्रकाशित होता) है वही इसका तुरीय, दर्शतं परोरजा, पद है। जो चतुर्थ होता है, वही तुरीय कहलाता है। 'दर्शतं पदम्' का अर्थ है– मानो दीखता है। 'परोरजा' का अर्थ है– यह सभी रज (लोकों) के ऊपर–ऊपर रहकर प्रकाशित होता है। जो गायत्री के इस चतुर्थ पाद को इस प्रकार जानता है, वह इसी प्रकार शोभा और कीर्ति से प्रकाशित होता है ।। 3 ।।

इसके पश्चात् पाँचवें मन्त्र में ऋषि ने गायत्री को प्राणों का त्राण करने वाली लिखा है, और बतलाया है कि इस गायत्री का उपदेश गुरु अपने शिष्य को उपनयन के समय करता है। पाँचवें मन्त्र में ऋषि ने यह आदेश दिया है कि गायत्री–छन्दवाली सावित्री ही, का उपदेश करना चाहिए, और किसी का नहीं। सातवें मन्त्र में यह दर्शाया है कि गायत्री की उपासना जिस कामना से की जाती है, वह पूर्ण होती है। और अन्तिम मन्त्र में गायत्री विधान के लिए यह कथा लिखी है– उस विदेह जनक ने बुडिल से यह बात कही थी कि तूने जो अपने को गायत्रीविद् (गायत्री तत्त्व का ज्ञाता) कहा था, तो फिर हाथी होकर भार क्यों ढोता है? इस पर उसने कहा– हे सम्राट्! मैं इसका मुख ही नहीं जानता था। तब जनक ने कहा– इसका मुख अग्नि ही है। यदि अग्नि में लोग बहुत–सा ईंधन रख दें तो वह इस सभी को जला डालता है। इसी प्रकार ऐसा जानने वाला बहुत–सा पाप करता रहा हो, तो भी वह उस सबको भस्म करके शुद्ध, पवित्र, अजर–अमर हो जाता है।

ये आठों मन्त्र बड़े महत्त्व के हैं और इनको खोलने के लिए एक बड़ी लम्बी व्खाख्या की ही नहीं अपितु एक लम्बे और परिपक्व अनुभव की भी आवश्यकता है। पहले मन्त्र में यह कहा है कि गायत्री के पहले पाद को जान लेने से त्रिलोकी के सारे पदार्थों को साधक जीत लेता है। दूसरे मन्त्र में यह कहा है कि जो गायत्री के दूसरे पाद को जान लेता है वह त्रयी विद्या को, उसके फल को जीत लेता है। तीसरे मन्त्र में यह बतलाया है कि तीसरे पाद को जान लेने से सारे प्राणि–समुदाय को जीत लेता है और चौथे तुरीय पाद को जानकर शोभा और कीर्तिवाला होकर चमकता है। इन तीनों मन्त्रों में जो 'जान लेने' की बात कही है, यह जानना या जान लेना क्या है? यह जानने का प्रयोजन यह है कि गायत्री के तीनों पदों में आये शब्दों के अर्थ जान लिये जाएँ? किसी पुस्तक से पढ़कर अथवा किसी विद्वान् से गायत्री की व्याख्या सुनकर क्या 'जानना' हो जाता है? यदि इसी प्रकार से 'जानना' की बात पूरी हो जाती, तब तो गायत्री–मन्त्र के सारे ही विद्वानों ने त्रिलोकी, श्री–विद्या और प्राणिसमूह को जीत लिया होता, परन्तु ऐसा दृष्टिगोचर तो हो नहीं रहा। तब इस **'वेद अप्येवंविद्'**– 'जो इस प्रकार जानता है'– का वास्तविक प्रयोजन क्या है? श्री शंकराचार्य जी ने भी इन मन्त्रों का भाष्य करते हुए इसका रहस्य नहीं खोला। उन्होंने भी 'अप्येवंविद्' तथा 'वेद' शब्दों का भाष्य इन्हीं शब्दों में कर दिया है।

जानना क्या?

अनुभवी लोग और जानने की अवस्था तक पहुँचे हुए कुछ महानुभाव इस जानने का प्रयोजन यह बतलाते हैं कि जब साधक गुरु से गायत्री का उपदेश लेता है तो वह फिर इस पर मनन करता है। निरन्तर दीर्घकाल तक मनन करते–करते प्रभु–कृपा से वह शुभ घड़ी आती है, जब साधक 'निदिध्यासन' की अवस्था में पहुँचता है और यहाँ साधक फिर एक लम्बे काल तक इस निदिध्यासन के मीठे समुद्र में एक अद्‌भुत आस्वादन लेता रहता है; तब ध्यान की पाँचवी परिपक्व–अवस्था में उसे एक–एक पाद का, पाद के एक–एक शब्द का और शब्द में निहित ज्योतिस्वरूप आत्मा का साक्षात्कार होता है– तब वह जाना जाता है। इसी अवस्था में पहुँचकर कहा जा सकता है कि एक पाद, या दो पाद, या तीसरे पाद को जाना गया। यह साक्षात्कार की अवस्था कैसे प्राप्त होती है, यह गायत्री–उपासना की विधि के वर्णन में बतलाया जा सकेगा।

इन मन्त्रों में रहस्य की कुछ और बातें भी हैं। इस अध्याय के दूसरे ब्राह्मण में बतला दिया है कि यदि साधक या उपासक बनना है तो पहले इन्द्रियों का दमन करो, चित्त को दया से भरपूर करो और दानशील बनो। यह एक अटल सत्य है कि दमनशील, दयालु और दानशील होने पर ही मानव को उपासना का अधिकार मिलता है। ये तीनों गुण यम–नियम की ओर संकेत करते हैं।

शेष अगले अंक में....

वैदिक प्रार्थना

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अथर्व. 19.15.5–6

O God, make me fearless.
Let me not fear my friends or foes.
Let me not fear
from the known or the unknown
during day or night.

Let me not fear anyone
and let me have friends
on all sides.

अभय करो प्रभु, अभय करो हमें।
भूमि से न भय हो, आकाश से न भय हो।
मित्रा से न भय रहे, शत्रु से न भय हो।
भय हो न सामने से, पीछे से न भय हो।
दायें से न भय हो, न बायें से ही भय हो।

दिन में न भय हो, न रात में भी भय हो।
शत्रु मेरा कोई न हो, सब ही दिशाएं मेरी
मित्रा बनें और मेरी मित्राता की जय हो!

संसार के सारे कार्य टका से ही सिद्ध हो रहे हैं

● श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

उसका जीवन व्यर्थ है जिसके पास टका और बुद्धि नहीं है। **'बुद्धिर्यस्यबलं तस्य'** – कहा जाता है कि बुद्धि ही सबसे बड़ा बल है, किन्तु उसकी भी प्राप्ति टका से ही होती है, क्योंकि बिना टका के न शिक्षा और न बिना शिक्षा के बुद्धि प्राप्त हो सकती है। इसलिए टका के बिना कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।

आज बिना टका के कोई एक कदम आगे नहीं बढ़ सकता। संसार के सारे कार्य टका से ही सिद्ध हो रहे हैं। बिना टका के माता–पिता अपने बालक को पाठशाला में भर्ती नहीं करा सकते, यदि एक टके की कमी पड़ जाय तो रेल टिकट नहीं मिल सकता। बिना टके के विज्ञान का कोई भी अविष्कार हम प्रयोग में नहीं ला सकते, मोबाइल से हम वार्तालाप नहीं कर सकते। यातायात नहीं कर सकते। भोजन की व्यवस्था नहीं कर सकते। व्यापार नहीं हो सकता। रोग की चिकित्सा नहीं करा सकते। धर्म का कार्य यज्ञादि नहीं हो सकता।

इस हेतु टका के लिये कोई रोजगार अथवा नौकरी करनी पड़ती है। अतः टका और विद्या दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे माता–पिता अपने बालक को उसका भविष्य बनाने के लिये विद्यालय में भेजकर शिक्षित कराते हैं, वैसे ही शिक्षित हो जाने पर यदि वह कोई व्यवसाय करना चाहता है तो उसे माता–पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन देकर करने देते हैं। इसके अलावा कोई नौकरी अथवा कला में जो सन्तान आगे बढ़ना चाहती तो उसे वही करने देना चाहिये। वह उसी में तरक्की करेगा और जिनके माता–पिता सामर्थ्यवान हैं, उनकी सन्तान यदि डाक्टर अथवा इंजीनियर बनना चाहती है तो योग्यता के अनुसार बन सकती है। आज के समय में टके की कदर अधिक है। बहुत से लोग ऐसे हैं कि शिक्षित होते हुए जिन्हें नौकरी नहीं मिलती। टके के अभाव से गरीब ट्रेनों में चाय आदि बेचते हैं।

संसार बिना टका के नहीं चल सकता। परिवार के सदस्यों को कुछ करोबार करना ही पड़ता है। जो कम लिखे पढ़े होते हैं वे कुली बनकर अपना परिवार चलाते हैं।

अतः बिना धनोपार्जन के जीवन का निर्वाह नहीं हो सकता।

कुछ लोग अनेक कारणों से गरीब बने रहते हैं तो कुछ लोग थोड़े धन से कारोबार की बढ़ोतरी से बहुत अमीर बन गये। बाबा रामदेव अपने सारे निर्माण में पतंजलि ऋषि का नाम क्यों लगाते हैं हमारी समझ में नहीं आता।

हमारे विचार से उनके सारे आयुर्वेदीय औषधियों के निर्माण में, पतंजलि ऋषि नाम का लेबल लगाना ठीक नहीं। उन औषधियों पर स्वयं रामदेव का नाम होना चाहिये, क्योंकि ऋषि पतंजलि का आविष्कार केवल योगशास्त्र, यम–नियमासन–प्राणायाम–प्रत्याहारधारणा ध्यानसमाधयोष्टानि तक पहुँचने का ही उपाय बताता है। पतंजलि ऋषि बाबा रामदेव जैसे कोई व्यापारी नहीं थे। इसलिये उनके नाम से उनके योगशास्त्रों के अनुसार योगाभ्यास कराना तो ठीक है, पर उनके नाम का औषधियों पर लेबल लगाकर व्यापार करना उचित नहीं है। उदाहरण के लिये कतिपय भिखारी लोग भिक्षा मांगते समय 'हरे राम हरे कृष्ण' का नाम लेकर भिक्षा माँगते हैं, किन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण कोई भिखारी नहीं थे। उनके समय में कोई भिखारी नहीं थे। यदि होता भी तो उनके नाम से भिक्षा माँगने वालो को दंड अवश्य मिलता।

बाबा रामदेव की खोज के अनुसार 'चार सौ लाख करोड़, का भारत का काला धन अवैध रूप से बड़े–बड़े लोग अफसर एवं नेता विदेशों में जमाकर रखे हैं। यदि वह धन भारत सरकार को प्राप्त हो जाये तो बिजली, पानी और खाद्यपदार्थ सभी सस्ते हो जायें। इसके अलावा देश के कर्मचारी सच्चे मन से पंचायत के प्रधान तथा वी.डी.ओ. निःस्वार्थभाव से काम करें और गरीब किसानों, मजदूरों तथा झोपड़ियों में रहने वालो के लिये यदि सरकारी धनों का आबंटन सही ढंग से किया जाय तो उन्हें मकान और रोजगार मिलने से, उन सबके विकास से सरकार को वोट के समय सबका साथ मिल सकता है। वेद में एक मंत्र आता है – 'जैसे कुएँ से जल निकाल खेत आदि को तृप्त करते हैं वैसे ही धनादि पदार्थों से प्रजा राजा को और राजा प्रजाओं का तृप्त करे।'

मैने अपने 81 वर्ष के जीवन में बहुतों को अमीर से गरीब और गरीब से अमीर होते देखा है। जो व्यापारी दाल में नमक के समान लाभ करते–करते बड़े कारोबारी हो जाते हैं उनकी तरक्की नहीं रुकती, और जिस परिवार में छः सदस्य हैं और काम करने वाले एक या दो हैं और यदि उनको शराब, जुये का नशा पकड़ लिया है तो वे कभी भी ईमानदारी से तरक्की नहीं कर सकते। सन् 1955 की बात है– दो कारीगर थे– एक सारे दिन में 40 रुपये का मजूदरी कर लेता था, पर शाम होते केवल 5 रुपया उसके पास बचता था, वह इसलिये कि शराब पीने पिलाने में खर्च कर देता था। और जो दूसरा था वह कोई नशा नहीं करता था, दस वर्ष में अपना मकान भी बना लिया और व्यवसाय के चलते दो कारीगर भी रख लिये।

एक पंजाबी परिवार था। मकान बड़ा और अच्छा था। उनके तीन सन्तान थे। कपड़े की दुकान थी किन्तु उनके पिता बहुत अहंकारी और सबसे मिजाज से बात करते थे ग्राहक से भी। धीरे–धीरे उनका कारोबार अचल हो गया, सन्तान लोग अपना हिस्सा मांगने लगे। अंत में मकान को बिक्री कर न जाने सब कहाँ चले गये।

जिन माता–पिता ने अपने बच्चों को पालन–पोषण करके बड़ा किया। उन सन्तानों के लिये मकान बनाया, उन्हें शिक्षित किया और सबका विवाह दान करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हें कारोबार के लिये धन दिया। ऐसे माता–पिता को जिनके पास कुछ नहीं रह गया, अब वे ही अपने सन्तान, पिता–माता को ठीक से नहीं देखते।

जिन माता–पिता ने अपने बच्चों को पालन–पोषण करके बड़ा किया। उन सन्तानों के लिये मकान बनाया, उन्हें शिक्षित किया और सबका विवाह दान करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हें कारोबार के लिये धन दिया। ऐसे माता–पिता को जिनके पास कुछ नहीं रह गया, अब वे ही अपने सन्तान, पिता–माता को ठीक से नहीं देखते।

किन्तु जिस पिता–माता के पास उनके पिता–पितामह का धन और सम्पत्ति तथा कारोबार बड़ा है उनके सन्तान अपने पिता को देवता के समान मानते और सेवा–सम्मान करते रहते हैं। इसके मूल में भी टका है। अतः बिना स्वार्थ के कोई मेल–मिलाप नहीं करता।

यदि आपके पास धन है तो आपका सभी सम्मान करेंगे। सर्वाधिक दान देने वाले को उच्चासन पर किसी सभा में बैठाया जाता है और नहीं है तो आपको कोई नहीं पूछेगा।

एक माने जाने धनी थे, उनका कारोबार बड़ा था। उनके यहाँ तीन व्यक्ति पहले से मौजूद थे, बाद में एक और व्यक्ति पहुँच गया। सभी को नाश्ता आया, पर जो एक साधारण व्यक्ति था, उसे नहीं आया। उसका अर्थ यही है कि बड़े लोगों के यहाँ जाने से बड़ों की ही कदर होती है, साधारण की नहीं।

भारत सरकार दहेज प्रथा के विरुद्ध है। फिर भी गुप्त रूप से बिना दहेज अर्थात् टका के शादी सम्बन्ध नहीं होता। दामाद को प्रसन्न करने के लिये टका चाहिये।

दान तीन प्रकार का होता है – ज्ञान दान, धन दान और विवाह के समय कन्यादान और इनके अलावा जिस समय आर्यावर्त (भारत) में गायों की अधिकता थी उस समय जो वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता प्रचारक और उसी के अनुसार संस्कार कार्य कराने वाले न महात्माओं और द्विज सुपात्रों को गौ दान भी किया जाता था। और गो मेध यज्ञ अर्थात् गौवों की योगेश्वर श्री कृष्ण के समय पूजा भी की जाती थी। किन्तु आज गौ की पूजा के स्थान पर उन्हें काटा जा रहा है। आज भारत अपनी आर्य संस्कृति और सभ्यता से बहुत दूर चला गया है। इसलिये किसी को शुद्ध दुग्ध और खीर के न मिलने से, मिलावट तथा कृत्रिम तरीके से खाद्यान्न के उत्पादन एवं उनके भोजन से आज सभी लोग किसी न किसी रोग से पीड़ित रहते हैं। आज भौतिक विज्ञान से मानव जितना आगे बढ़ा है उतना ही आध्यात्मिक चरित्र निर्माण में पीछे रह गया है।

चरित्र– जिस व्यक्ति में नैतिकता, सदाचारिता, मैत्रीभाव और प्रियवाणी है, वह चरित्रवान है। अर्थात् धन के नष्ट हो जाने पर मनुष्य का कुछ नहीं बिगड़ता, स्वास्थ्य खराब हो जाने पर कुछ बिगड़ता है, लेकिन यदि चरित्र भ्रष्ट हो गया तो समझ लो सबकुछ नष्ट हो गया। धन फिर कमाया जा सकता है, स्वार्थ फिर सम्पादन किया जा सकता है, लेकिन भ्रष्ट हुआ चरित्र फिर कलंक रहित नहीं बनाया जा सकता। इसलिये मिस्टर हावेज ने कहा है– चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है। वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायक और संरक्षक प्राप्त कराता है और (अपरिग्रह) न्याय पूर्वक कमाया गया धन सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है।

मु.पो. मुरारई, जिला–वीरभूम
(प.बंगाल) 731219
मो. 8158078011

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– अपने देश–धर्म के लिए झूठ बोलना पाप है या नहीं?

समाधान– झूठ बोलना तो पाप ही है। चाहे देश के लिए बोलो या धर्म के लिये बोलो। दोष तो लगेगा ही।

● यह 'मिश्रित–कर्म' माना जायेगा। यदि आपके झूठ बोलने से देश की रक्षा होती है, देश का भला होता है, तो ठीक है, जितना भला होता है, उतना पुण्य। और जितना झूठ बोला, उसका पाप। यह मिश्रित कर्म कहलाता है।

● वेद में केवल राजा को आपत्ति काल में झूठ बोले की छूट है। और वह भी प्रजा की रक्षा करने के लिये, अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये नहीं। जैसे कि– राजा गुप्तचर विभाग (C.I.D. C.B.I.) रखे। चोर, डाकू, आतंकवादियों को पकड़ने और दंडित करने और देश की रक्षा करने के लिए छल–कपट का प्रयोग करे। केवल क्षत्रियों को छूट है, आम जनता को नहीं। दुष्टों को मारने के लिए क्षत्रियों को थोड़ी सी छूट दी गई है। उसको भी दोषयुक्त माना है, पूर्ण शुद्ध तो उसको भी नहीं माना।

● उसको भी इसीलिये दोषयुक्त माना, कि जो उन्होंने झूठ, छल–कपट का प्रयोग किया। इससे उनका मोक्ष रुक जायेगा। उनको मोक्ष नहीं मिलेगा।

● इसलिये राजाओं को राजगद्दी छोड़नी पड़ी। आप इतिहास को उठाकर देखें। राजा जनक ने राजगद्दी छोड़ दी। राजा भरत ने राजगद्दी छोड़ दी। राजा अशोक ने राजगद्दी छोड़ दी और ऐसे बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं। कई राजा लोग अपनी गद्दी छोड़ के गये। क्योंकि उनको समझ में आ गया, कि राजा बने रहते हुये हमारा मोक्ष होने वाला नहीं है।

● गाय की रक्षा के लिए जाओ, हड़ताल करो। रेलवे कर्मचारी रेल की स्ट्राइक, बस वाले कर्मचारी बस की स्ट्राइक, यूनिवर्सिटी वाले विद्यार्थी यूनिवर्सिटी की स्ट्राइक करते हैं तो गौ की रक्षा के लिए आप हड़ताल क्यों नहीं करते? इसके लिए अनशन करो, हड़ताल करो। आंदोलन करोगे, सरकार झुकेगी। यदि उसको वोट चाहिए, तो सब कुछ मानेगी। परन्तु आम जनता झूठ बोले, यह बात वेद विरूद्ध है। यह बात उन स्वार्थी लोगों ने समाज में फैलाई है, जो स्वयं झूठे हैं, झूठ से प्रेम करते हैं। झूठ को प्रोत्साहन देने वाले ऐसे लोगों को ईश्वर दण्ड देगा।

शंका– कहते हैं "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात्सत्यमप्रियम" अर्थात् सत्य बोलें, मीठा बोलें, कड़वा सत्य न बोलें। तो शंका यह है, कि क्या अपवाद रूप में 'झूठ बोलना' भी धर्म हो सकता है?

समाधान– वेदों में कहा है "सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्" और मनु महाराज कहते हैं "सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात्सत्यप्रियम"? अर्थात् सत्य बोलें, मीठा बोले, कड़वा सत्य न बोलें। तो शंका यह है, कि मनुजी के अनुसार– सत्य न बोलें। अर्थात् क्या अपवाद रूप में 'झूठ बोला' भी धर्म हो सकता है?

● आपने मनु जी की बात पर पूरा ध्यान नहीं दिया। मनुजी ने यह नहीं कहा– 'सत्य न बोलें।' बल्कि यह कहा– 'कड़वा सत्य न बोलें'। **अर्थात् सत्य ही बोलें, परन्तु मीठा बना कर बोलें।** उन्होंने इसी श्लोक के दूसरे भाग में कहा है– **'प्रियं च एर्ष धर्मः सनातनः।'** अर्थात् **मीठा तो बोलें, परन्तु झूठ न बोलें।** यही वेदों का प्राचीन धर्म है। देखिये, झूठ बोलने को मना किया है। इसलिए वेद में और मनु जी में कोई विरोध नहीं है।

● इन दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। और ना ही 'झूठ बोलना' अपवाद रूप में धर्म हो सकता है। झूठ बोलने को अपवाद रूप में भी धर्म नहीं माना है। क्योंकि जिसका अपवाद है, वो धर्म नहीं हो सकता। इसमें तो आपकी यह मान्यता सामने आ रही है कि सत्य का भी अपवाद होता है। तो कौन सा अपवाद है सत्य का? कोई नहीं। **सत्य और झूठ, ये दोनों परस्पर विरोधी हैं। इसलिए दोनों धर्म नहीं हो सकते।** अतः सत्य बोलना रूपी धर्म का कोई अपवाद नहीं है। इसलिये सत्य बोलना ही धर्म है।

● व्यवहारभानु में लिखा है– **'न हि सत्यात् परोधर्मो नासत्यात् पातकं परम्'** अर्थात् **सत्य से बढ़कर कोई ऊँचा धर्म नहीं है और झूठ से बढ़कर कोई गिरा हुआ पाप नहीं है।** सबसे घटिया पाप है– 'झूठ बोलना'। सबसे बढ़िया पुण्य, सबसे ऊँचा धर्म– 'सत्य बोलना'। सत्य बोलने वाला तो मोक्ष में चला जाता है। और झूठ बोलने वाला नरक में चला जाता है। इसलिये सत्य बोलना पूरा धर्म है, उसका कोई अपवाद नहीं है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
आर्य–1 रोजड़, पो. सागपुर,
जिला साबरकांटा, गुजरात

स्वतंत्रता संग्राम के 3 वर्ष विद्रोह की अग्नि को प्रज्ज्वलित किया संन्यासियों ने

सर्वश्री पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द, 160 वर्ष, उनके शिष्य पूर्णानन्द 110 वर्ष, उनके शिष्य स्वामी विरजानन्द, 79 वर्ष, उनके शिष्य स्वामी दयानन्द पंचायतों के रिकार्ड के आधार पर स्वतंत्रता आन्दोलन

● हरिश्चन्द्र आर्य

सर्व खाप पंचायत सोरम के रिकार्ड के अनुसार पहली सभा सन् 1855 के प्रारंभकाल में हरिद्वार में हुई थी जिसमें बहादुर शाह जफर का पुत्र फिरोज शाह, राय साहब मराठा (संभवतः नाना साहब), बाबा साहब मराठा रंगू वापू, अजीमुल्ला खां और रमजान बेग मुख्य रूप से उपस्थित थे। कुल उपस्थिति 1500 के लगभग थी। ब्रिटिश सरकार के हिन्दुस्तानी सैनिकों में विद्रोह की भावना का प्रसार करने के लिए कमल के फूल चपाती के वितरण की योजना इसी सभा में पूज्य स्वामी ओमानन्द जी द्वारा तैयार की गई– दूसरी सभा 5 अक्टूबर 1855 को गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर मेल के क्षेत्र से कुछ दूरी पर आयोजित की गई। स्वामी पूर्णानन्द इस सभा के प्रधान थे और साईं फखरुद्दीन उप प्रधान। फखरुद्दीन पीरान कलियर (हरिद्वार और रुड़की के बीच में स्थित एक मुस्लिम धर्म स्थान) में रहा करते थे और हिन्दू संत महात्माओं से उनका अच्छा मेल जोल था। गढ़ गंगा की उपस्थिति 2500 के लगभग थी। सभा में स्वामी पूर्णानन्द जी ने जो भाषण दिया था मौलवी जहीर अहमद ने इसका सार इस प्रकार लिखा है–

"मुल्क को फिरंगी के भरोसे मत छोड़ो वे बेदीन हैं इनका कोई फौल फेल नहीं है। यह राजा नहीं बल्कि तिजारती लुटेरे और जरपरस्त हैं। ये हमारे मुल्क की तमाम मखलूक के हर इंसान की जिन्दगी के दुश्मन है और ये तुम्हारा खून और गोश्त खा जायेंगे इनसे बचो– ये तुम्हारी नस्लों को नेस्तनाबूद कर देंगे और हमारे मुल्क में खुद आबाद होकर रहेंगे इन्हें अपने मुल्क से निकालो।

तीसरी सभा दस दिन बाद 11 अक्टूबर 1855 को हरिद्वार के पहाड़ में की गई। थी इसे भी स्वामी पूर्णानन्द जी ने आयोजित किया था। इसमें 565 साधु उपस्थित थे जिसमें 195 मुसलमान साधु थे। मौलवी जहीर अहमद इस सभा में सम्मिलित हुए कुछ प्रमुख साधुओं के नाम भी दिये हैं जिनमें प्रजाचक्षु स्वामी विरजानन्द का नाम भी है और साथ ही गोल मुख वाले नौजवान दयानन्द का भी। सभा में स्वामी पूर्णानन्द, सांई फखरुद्दीन ने भाषण दिये थे और लोगों को देश के उत्थान और स्वतंत्रता की प्रेरणा दी थी।

स्वामी पूर्णानन्द जी का निवास कनखल हरिद्वार में था और वे अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान एवं सन्त थे। उन्हें पूर्ण दास सन्त भी कहते थे। उनकी आयु सन 1857 में 110 वर्ष की थी और सर्व खाप पंचायत के रिकार्ड के अनुसार अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की योजना तैयार करने में उनका प्रमुख कर्तव्य था। संभवतः यह कल्पना असंगत नहीं है कि मैसूर के सैनिक कमीशन के सम्मुख गवाही देते हुए सीताराम बाबा ने जिसे दस्सा बाबा कहा है वे स्वामी पूर्णानन्द ही थे। शुरू में अपने गुरु ओमानन्दजी महाराज के साथ मिलकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनायी थी और जब पूज्य ओमानन्द अत्यन्त वृद्ध 160 वर्ष के

शेष पृष्ठ 06 पर

आर्य समाज की उन्नति कैसे हो?

● अश्विनी कुमार पाठक

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना 1975 ईसवी को सर्वप्रथम मुम्बई महानगर में एक क्रांतिकारी आन्दोलन के रूप में की थी। इसके बाद देश के अन्य नगरों में भी इसकी स्थापना हो गई। अल्पकाल में ही इस संगठन की स्थापना भारत के सभी प्रदेशों तथा विदेश में इग्लैंड, अमरीका, कैनेडा, केन्या, मारीशस, म्यामार तथा अफ्रीका इत्यादि में भी हो गई। इस तरह लाखों व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य बने है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के जो दस नियम बनाये थे वे वास्तव में मानव निर्माण के 10 साधन हैं। छठे नियम के अनुसार आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य संसार का उपकार करना है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। देश के सब प्रदेशों में आर्य प्रतिनिधि समाएं हैं जो अपने अपने प्रदेश में सभी समाजों को नियंत्रण में रखती हैं तथा वेद प्रचार में सहयोग देती हैं। आर्य समाज का मुख्य धर्मग्रंथ वेद है जिसका ज्ञान आदि सृष्टि में ईश्वर ने चार ऋषियों द्वारा दिया था जो सब मनुष्यों के लिए उपयोगी है। वेद के अनुसार ही हमारे अन्य धर्म ग्रन्थ उपनिषद्, रामायण, महाभारत इत्यादि है। आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है जिसका कार्यालय नई दिल्ली में रामलीला मैदान के निकट है। शिक्षा के प्रचार के लिये अनेक स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय तथा डी.ए.वी. विश्वविद्यालय है। इनके अतिरिक्त युवकों के संगठन आर्य वीरदल तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् इत्यादि हैं। वेद की शिक्षाओं को साधारण जनता तक पहुंचाने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश है। उन्होंने वेदों का संस्कृत तथा हिन्दी में भाष्य भी करना प्रारम्भ किया था परन्तु धर्म विरोधी लोगों ने उनको कई बार विष देकर मारने के यत्न किये और विष के कारण ही उनका 59 वर्ष की आयु में ही बलिदान हो गया इसलिये वह चारों वेदों का भाष्य पूरा नहीं कर सके।

उनके बाद अनेक आर्य विद्वानों ने वेद का प्रचार जारी रखा जिससे आर्य समाज की बड़ी उन्नति हुई और इसने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा समाज सुधार के कार्य किये। परन्तु अब कुछ समय से आर्य समाज का वेद प्रचार का कार्य ढीला पड़ गया है। इसलिये साप्ताहिक सत्संगों में हाजिरी कम होती जा रही है। अधिकांश परिवार भी आर्य समाजी नहीं हैं। महर्षि दयानन्द ने सब आर्यों के लिये निर्देश दिया था अपना धर्म वैदिक और जाति आर्य लिखायें परन्तु इस ओर नेताओं ने विशेष ध्यान नहीं दिया। अब नये सदस्य बन नहीं रहे और पुराने दिवंगत हो रहे हैं। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा?

आर्य समाज केवल हवन यज्ञों तक ही सीमित हो रही है। वेद प्रचार से विद्वान डर रहे हैं और पाखंड खंडन नहीं कर रहे ताकि लोग नाराज न हो जायें। इस समय आर्य समाज का कोई सर्व मान्य नेता ही नहीं है। छोटे-2 नेता स्वार्थ और पदों के लालची बन कर आपस में ही मुक़द्मे बाजी कर रहे हैं। इसलिये किसी नेता अथवा विद्वान् को आगे आकर चुनाव सम्बन्धी झगड़े समाप्त कराने चाहियें तभी संगठन को बचाया जा सकता है। आर्य समाजों को सक्रिय होकर निम्न कार्यक्रम बनाना चाहिये।

1. कुछ आर्य समाजों में दैनिक सत्संग होता है। आर्य समाज को जब मन्दिर का रूप दिया गया है तो प्रत्येक आर्य समाज में प्रातः सायं सन्ध्या सत्संग दोनों समय हो। हवन छोटे रूप में एक ही बार कर सकते हैं।

2. आर्य समाजों को महीने में एक बार आर्य समाज मन्दिर से बाहर किसी कॉलोनी में सत्संग करना चाहिये तभी जनता आर्य समाज से जुड़ेगी।

3. आर्य समाजों में सब त्योहार तथा वार्षिकउत्सव अवश्य मनाये जायें।

4. सब आर्यजन अपना धर्म वैदिक ही लिखें लिखायें।

5. आर्य समाज परोपकार तथा समाज सुधार के कार्य अर्थात् कम खर्च पर विवाह तथा महिलाओं का सम्मान बढ़ाने, कन्या भ्रूण हत्या रोकने का प्रचार करती रहें। प्राकृतिक आपदाओं अकाल, भूचाल इत्यादि से पीड़ितों की सहायता करना, भ्रष्टाचार तथा महिलाओं से बलात्कार का विरोध।

6. आर्यसमाज के साप्ताहिक संग के बाद ऋषि लंगर चलाने की व्यवस्था की जाये जबकि गुरुद्वारों में तो प्रतिदिन लंगर चलते हैं। धन की कमी नहीं होगी।

7. सब सदस्यों को परिवार सहित सत्संग में भाग लेना चाहिये। जो दैनिक सत्संग में न जा सकें उन्हें अपने-अपने घरों में हवन कभी अवश्य कराना चाहिये और सन्ध्या तो दोनों समय करनी चाहिये।

उपरोक्त सुझावों पर अमल करने से ही आर्य समाज जीवित रहेगा और वेद का प्रचार करता रहेगा।

सब आर्यजन ये चार पक्तियाँ हमेशा याद रखें

आर्य हमारा नाम है वैदिक हमारा धर्म।
ओम हमारा ईश है यज्ञ योग हमारा कर्म।
सत्य, अहिंसा हमारे लक्ष्य हैं गायत्री महामन्त्र।
भारत हमारा देश है सदा रहे स्वतंत्र।

सी-233 नानक पुरा,
नई दिल्ली-21

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

स्वतंत्रता संग्राम के 3 वर्ष...

हो गये तो वे ही नाना साहब आदि का मार्ग दिखाते रहे।

सन् 1855 में कुम्भ के अवसर पर स्वामी दयानन्द जी उनसे मिले थे और सन्यास दीक्षा ली थी और उनसे विद्या पढ़ने की इच्छा प्रगट की थी। पूर्णानन्द जी वृद्ध थे अतः उन्होंने दयानन्द से कहा था कि स्वामी विरजानन्द जी के पास जाकर विद्या अध्ययन करें। पर साथ यह भी कहा था कि विद्या पढ़ने से पहले देश के सुधार तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कार्य में जी जान से जुट जाओ। भारतवर्ष की छोटी बड़ी रियासतों को संगठित कर स्वत्रंतता की शंखनाद करें। इसके बाद स्वाधीनता संग्राम के लिए जो सभाएं हुईं दयानन्द उन में सम्मिलित होते रहे। संवत 1913 सन् 1856 में जिस सभा का मीर मीरासी द्वारा लिखित विवरण दिया गया है स्वामी दयानन्द उसमें स्वयं उपस्थित थे।

मीर मीरासी की रिपोर्ट

सन् 1856 सं 1913 को एक पंचायत मथुरा के तीर्थग्रह पर मुनक्किद हुई। उसमें हिन्दू मुसलमान और दूसरे मजहब के लोगों ने शिरकत की थी। इस पंचायत में एक नाबीना हिन्दु दर्वेश को लाया गया था। एक पालकी में बैठाकर उनके आने पर सब लोगों ने उनका अदब किया। जब वह एक चौकी पर बैठ गये तब हिन्दू मुसलमान फकीरों ने उनकी कदम बोसी की। इसके बाद सब पंचायती लोगों ने इनका अदब किया- सबके अदब के साथ नाना साहब पेश हुए- मौलवी अजीमुल्ला खान, रंग बापू और शहनशाह बहादुरशाह का शहजादा इन सबने अदब में आकर अशरफ़ियाँ पेश कीं। इसके बाद एक हिन्दू एक मुसलमान फकीर ने कहा कि हमारे आका की जुबानें मुबारक से जो तकरीर होगी उसे तसल्ली के साथ सब लोग सुनें और वह इस मुल्क के लिए बहुत मुफीद साबित होगी और यह वली उल्लाह साधु बहुत बहुत जबानों का आलिम और हमारा और हमारे मुल्क का बुजुर्ग है। खुदा की मेहरबानी से ऐसे बुजुर्ग हमें मिले हैं यह खुदा का हम पर बड़ा एहसान है।

दर्वेश की तकरीर का आगाज- सबसे पहले उन्होंने खुदा की तारीफ की फिर उर्दू में उसका तर्जुमा किया। इस बुजुर्ग ने यह कहा था कि आजादी जन्नत और गुलामी दोजख है। अपने मुल्क की हकूमत गैर मुल्की हकूमत के मुकाबले में हजार दर्जा बेहतर है। दूसरों की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बाईस है। हमें किसी कौम से, किसी मुल्क से कोई नफरत नहीं है। हम तो खल्के खुदा की बहबूदी के लिए खुदा से दुआ मांगते हैं मगर हुक्मरान कौम खासकर फिरंगी जिस मुल्क में हकूमत करते हैं उस मुल्क के वाशिन्दों के साथ इन्सानियत का बर्ताव नहीं करते और कितनी भी अपनी अच्छाइयों की तारीफ करें मगर उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ मवेशियों से गिरा हुआ बर्ताव करते हैं। खुदा की खलकत में सब इंसान भाई भाई हैं मगर गैर मुल्की हुकमरानों हैं। उन्हें भाई न समझकर गुलाम समझते किसी भी महजबी किताब में ऐसा हुक्म नहीं है कि अशरफुल मखलूकात के साथ दगा की जाये। अल्लाह के हुक्म की खिलाफ वर्जी की जाये, इस वास्ते लोगों का ईमान है और न उनकी शान है। फिरंगियों में बहुत सी अच्छी बातें भी हैं मगर सियासी मामले में आकर वह अपने फेल बेजा को न समझकर फौरन बदल जाते हैं और हमारी अच्छाई और नेक सिलावी फौरन ठुकरा देते हैं। इसकी असल वजूहात यह है कि वे हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझते यही सब कमी का वाइस है।

हमारे मुल्क का बच्चा-2 उनकी खैर ख्वाही का दम भरे फिर भी वह अपने वतन के कुत्तों को हमारे इंसानों से अच्छा समझते हैं। यही सब कमी का वाईस है- उन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत है इसलिए हम सब वाशिन्दगाने हिन्द से इल्तिजा करते हैं कि जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत करते हैं उतना ही इस मुल्क के हर इंसान का फर्ज है कि वह वतन परस्त बने और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई भाई जैसी मुहब्बत करे। जब तुम्हारे दिलों में वतन परस्ती आ जायेगी हिन्द के रहने वाले सब आपस में हिन्द भाई हैं और बहादुर शाह शहनशाह है।

सन् 1856 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह की तैयारियां तेजी के साथ हो रही थी। स्वामी विरजानन्द भी उसी के लिए कार्य कर रहे थे इसी सिलसिले में वह सर्व खाप पंचायत में आये थे। उनके व्याख्यान से लोगों में उत्साह का संचार हो गया। और बहुत से युवक अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई के लिए सेना में भरती होने को तैयार हो गये। बहुत सी युवतियों ने भी स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए अपनी सेवा अर्पित की थी। सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड में उन युवतियों के नाम भी सुरक्षित हैं।

अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय, अमरोहा
मुरादाबाद

भारत का महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

● डॉ. सहदेव वर्मा

यों तो भारत में अनेक महापुरुषों ने समय समय पर जन्म धारण कर एक से एक महान कार्य करके देश और जाति का नाम रोशन किया है। परन्तु इस संक्षिप्त लेख में हम भारत माता के एक ऐसे सपूत का परिचय प्रस्तुत करेंगे, जिसने अपने अत्यन्त लघु जीवन में इतना अद्भुत कार्य किया है, जिसका नाम और काम हम भारतवासी भले ही न जानते हों परन्तु जिसने विश्व–पटल पर भारत माता का नाम उज्ज्वल किया है।

भारत माता के उस कपूत का नाम है "श्रीनिवास रामानुजन"। रामानुजन के विषय में विदेशों में तो विशाल शिक्षित समाज विशेष रूप से यूरोप और अमेरिका के गणितज्ञ उसकी अनुपम गणित प्रतिभा से परिचित हैं, परन्तु भारतीय समाज उसकी खोज पूर्ण जानकारी से प्रायः अनजान ही है।

श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 सितम्बर सन् 1887 को तमिलनाडू के एक छोटे से गाँव इरोड में हुआ था। उसके पिता श्रीनिवास आंयगर तंजापुर जिले के कुँभ–कोणम गाँव में कपड़े की एक दुकान में मुनीम थे। परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। उसकी माता कोमलताम्मल धार्मिक प्रवृति की परम्परावादी महिला थी। इन्हीं धार्मिक संस्कारों के कारण रामानुजन भी सुबह शाम पूजा पाठ तो करते ही थे, पहनावा भी परम्परावादी था। ढीली ढाली धोती तथा लम्बी चोटी के साथ ही माथे पर तिलक भी लगाते थे।

रामानुजन पढ़ने में प्रारम्भ से ही तेज थे। परन्तु इनकी विशेष रुचि गणित में ही थी। इसीलिये ये दूसरे विषयों की उपेक्षा कर अधिकांश समय तथा परिश्रम गणित में ही लगाते थे। दसवीं कक्षा तक तो ये किसी प्रकार सब विषयों में उत्तीर्ण होते रहे, किन्तु ग्यारहवीं कक्षा में गणित को छोड़कर सब विषयों में अनुत्तीर्ण हो गये। इनकी गणित की उत्तर पुस्तिका को देखकर इनके गणित के शिक्षक तो आश्चर्य चकित रह गये। उसमें रेखागणित तथा बीजगणित के अनेक प्रश्न विविध ढंग से हल कर रखे थे।

अभी रामानुजन की आयु सोहल वर्ष की भी नहीं हुई थी, किन्तु इसी आयु में इन्होंने विश्वविख्यात गणितज्ञ जी. एस. कार की गणित की पुस्तक में से ज्यामिति तथा बीज गणित के प्रमेय व अनेक सूत्र हल कर दिये थे। त्रिघात एवं चतुर्घात समीकरण हल करने के उपाय खोज निकाले थे। रामानुजन का सारा ध्यान गणित, बीज गणित तथा रेखा गणित से सूत्रों को हल करने में ही केन्द्रित था। परिवार की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी और इनका विवाह भी हो गया था। इसलिये नौकरी के लिए भी भटकना पड़ा। इन कारणों से गणित के शोध कार्य में भी बाधा आई। परन्तु कई उच्च अधिकारियों के सहयोग से नौकरी के साथ–साथ गणित का कार्य भी चलता रहा।

सयोग ही समझिये कि जब रामानुजन पारिवारिक आर्थिक स्थिति के सुधार और गणित सम्बन्धी खोज में लगे हुए थे, तभी प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रो. सी. वी. राजगोपालाचारी और प्रो. रामचन्द्र राव के सहयोग से गणित कार्य में व्यस्त थे,उसी समय कैम्ब्रिज–विश्वविद्यालय (लन्दन) के गणित के प्रो. जी.एस. हार्डी को रामानुजन के गणित सम्बन्धी अद्भुत कार्य की सूचना मिली और प्रो. हार्डी ने स्वयं रामानुजन के इस कार्य को देखा तो वे इस गणितीय शोध के कार्य को देखकर आश्चर्य चकित रह गये। इसे प्रो. हार्डी का बड़प्पन ही कहा जायेगा कि उन्होंने इंग्लैण्ड के अन्य कई प्रसिद्ध गणितज्ञों से शीघ्र विचार विमर्श करके साथ ही मद्रास विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारियों तथा भारत में उच्च पदासीन अंग्रेजी अधिकारियों से विचार विमर्श करके रामानुजन को इंग्लैण्ड बुलाने का प्रबन्ध कराया।

जब प्रो. हार्डी के माध्यम से रामानुजन को इंग्लैण्ड जाने का निमंत्रण मिला तो उनकी माता ने स्पष्ट रुप से इस निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। क्योंकि उस समय समुद्र यात्रा अशुभ मानी जाती थी और यह कार्य धर्म विरोधी माना जाता था। रामानुजन की माता जी ने सुन रक्खा था कि समुद्र पार विदेश में लोग माँस मदिरा आदि दुर्व्यसनों में फँस जाते हैं। परन्तु रामानुजन ने माता जी को वचन दिया कि वे (रामानुजन) वहाँ जाकर भी धर्म मर्यादा का पूरी तरह से पालन करेंगे तथा सदा शाकाहारी भोजन का ही सेवन करेंगे। तब जाकर उनकी माता जी उन्हें विदेश भेजने के लिए सहमत हुई।

इसके बाद 17 मार्च सन् 1914 ई को रामानुजन ने इंग्लैण्ड के लिए प्रस्थान किया वहाँ जाकर रामानुजन ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉजिल में शोधार्थी के रुप प्रवेश ले लिया। रामानुजन को प्रवेश दिलाकर भविष्य में भी शोध–कार्य तथा छात्र–वृत्ति आदि दिलाने के लिए भी प्रो. हार्डी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

सन् 1914 से 1919 ई तक प्रथम महायुद्ध के समय रामानुजन अपना शोध कार्य तो करते रहे, परन्तु इस समय में उनके जीवन में काफी उतार–चढ़ाव आये। विश्वयुद्ध के कारण गणित के कार्य में बाधा, खान पान में कठिनाई (क्योंकि शाकाहारी होने के कारण रामानुजन अपना खाना अपने हाथों से ही बनाते थे) वहाँ अत्यधिक शीत के कारण (जिसके वे अभ्यस्त नहीं थे) बार–बार बीमार हो जाने से कार्य में रुकावट तो होती ही थी, फिर भी इस समय में उन्होंने लगभग 40 शोध–पत्र वहाँ की विद्वत्समिति में प्रस्तुत किये। उनके इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए 19 मार्च 1916 को उन्हें कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से स्नातक उपाधि प्रदान की गई।

6 दिसम्बर सन् 1917 ई को उनकी नियुक्ति **'फैलो ऑफ लन्दन मैथेमैटिकल सोसायटी'** के रूप में की गई। फरवरी सन् 1918ई में वे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के सदस्य के रूप में नियुक्त हुए। मई 1918 में उन्हें **'फैलो ऑफ रायल सोसायटी'** बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 19 अक्टूबर 1918 को वे 'ट्रिनिटी कॉलिज' के फैलो निर्वाचित हुए। इस पद पर निर्वाचित होने पर रामानुजन ने स्वयं को विशेष गौरवान्वित महसूस किया। क्योंकि इनके गुरुजन पूज्य तथा आदरणीय प्रो. हार्डी भी ट्रिनिटी कॉलिज' में इसी पद पर कार्यरत रह चुके थे।

इस प्रकार अनेक पद–प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त कर जब रामानुजन स्वदेश लौटे तो वे असाध्य रोगों से ग्रस्त थे। किन्तु आपदाग्रस्त स्थिति में भी उनकी गणित की साधना नहीं छूटी। पेट में पथरी होने के कारण रामानुजन उठने बैठने में अत्यधिक असुविधा महसूस करते थे। उस समय अपनी पत्नी से कह देते थे कि 'कमर के पीछे तकिया लगाकर बैठा दो और तकिये के सहारे बैठकर स्लेट और चाक लेकर, बस गणित के सूत्र सुधारने में मग्न हो जाते थे।

अपने देहान्त से दो महीने पहले 12 जनवरी 1920 को रामानुजन ने प्रो. हार्डी को अन्तिम पत्र लिखा, उसमें उन्होंने **'मॉका थीटा फंकशन'** पर मिले परिणामों को लिखकर भेजा था।

श्रीनिवास रामानुजन ने केवल 32 वर्ष की आयु तक निरन्तर संघर्षरत रहकर गणित के क्षेत्र में अपूर्व ऊँचाई प्राप्त की। उनके द्वारा किये गये शोधकार्य का पार्टीकल, कम्प्यूटर साइंस, क्रायप्टोग्राफी, पोलिमर कैमिस्ट्री, परमाणु भट्टी, दूरसंचार, कम्न्यूकेशन, नेटवर्क, घात, न्यूक्लीयर फिजिक्स, चिकित्सा विज्ञान आदि क्षेत्रों में आज भी प्रयोग किये जा रहा है। उनके तीन हस्त लिखित प्रपत्र–**'टाटा–इन्सटीट्यूट ऑफ फन्डामैन्टल रिसर्च'** के द्वारा प्रकाशित किये गये।

विश्व विख्यात दार्शनिक तथा प्रसिद्ध गणितज्ञ बट्रेन्ड–रसल ने प्रो. हार्डी तथा प्रो. लिटिल वुड से अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आप लोगों ने 'एक हिन्दू क्लर्क में से दूसरे न्यूटन को खोज निकाला है' भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा कि 'भारत ही नहीं पूरे विश्व के गणितज्ञों के लिए रामानुजन निरन्तर प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।' प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रो. हार्डी ने तत्कालीन गणित के विद्वानों का आकलन करते हुए विश्व के गणित के विद्वानों को 100 में से इस प्रकार अंकों का वितरण किया है:–'प्रथम' श्रेणी के गणितज्ञ अर्थात् स्वयं को 25 अंक।' प्रसिद्ध गणितज्ञ लिटिल वुडको 30 अंक। जर्मनी के शीर्षस्थ गणितज्ञ हिल–वर्ड को 30 अंक तथा रामानुजन को 100 में से 100 अंक प्रदान किए। इससे अधिक प्रशंसनीय और क्या प्रमाण पत्र हो सकता है।

अप्रैल 1976 की 'विस्कोन्सिन यूनिसर्सिटी' में विजिटिंग प्रोफेसर के रुप में कार्य करने वाले प्रो. जार्ज एन्ड्रूयूज की ट्रिनिटी कॉलिज के पुस्तकालय में काम करते हुए अचानक 140 पृष्ठ मिल गए। प्रो. एन्ड्रूयूज ने वे सारे पेपर्स 'द लास्ट नोटबुक ऑफ रामानुजन' (The Last Notebook of Ramanujan) के नाम से प्रकाशित कराये। इन पर आज भी दुनिया भर के महान गणितज्ञ कार्य कर रहे हैं। अमेरिका के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ ने रामानुजन के अंतिम पत्र को सिद्ध करने का दावा किया है। गणित के इन फार्मूलों को जन–जन तक पहुँचने की प्रतीक्षा है। जिस समय रामानुजन लन्दन में बहुत बीमार, लगभग मरणासन्न अवस्था में थे, तब प्रो. हार्डी उनसे मिलने के लिए वहाँ गये। जाते समय बराबर यही विचार करते रहे कि 'आज रामानुजन से मैं गणित के विषय के सम्बन्ध में कोई किसी प्रकार की चर्चा नहीं करुँगा।' परन्तु जब वे रामानुजन से मिले तो उन्होंने रामानुजन से कहा कि –'आज मैं जिस टैक्सी से आया हूँ उसका नम्बर 1729 है, जो अपशकुन संख्या है।' इस पर रामानुजन ने कहा :– 'नहीं नहीं सर, यह संख्या छोटी से छोटी संख्या है। जिसे भिन्न रुपों में दो संख्याओं को धन के योग के रुप में व्यक्त किया जा सकता है।' और तभी पास में रखे कागज पर पेंसिल से इस संख्या को इस प्रकार हल कर दिया। यद्यपि अत्यन्त भीषण बीमारी के कारण उन्हें हाथ में पेंसिल पकड़ने में भी कठिनाई हो रही थी। :–

$1729=1^3+12^3$

$1729=9^3+10^3$

$1729=7\times13\times19$

इस बात को सुनकर महान गणितज्ञ लिटिल बुड की टिप्पणी थी :–

वास्तव में रामानुजन प्रत्येक संख्या के अभिन्न मित्र थे। आज भारतमाता के इस अमर रत्न को कितने भारतीय जानते हैं? यह कैसी विडम्बना है? सचमुच रामानुजन के विषय में ' न भूतो न भविष्यति' लोकोक्ति खरी उतरती है। काश! भारत के गणितज्ञ रामानुजन का अनुगमन कर सकें।

24/4 विशन स्वरुप कॉलोनी, पानीपत,

राम भक्त साध्वी शबरी

● डॉ. अशोक आर्य

त्रेतायुग का आधार वर्णाश्रम होने से विभिन्न वर्ण अपने अपने कर्त्तव्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करते थे। किसी प्रकार का जातीय भेदभाव उन दिनों न था। धर्म की सर्वत्र प्रतिष्ठा थी। जनसंख्या अत्यधिक न होने से उस समय विशाल जंगल थे, जिनमें विरक्त, त्यागी, तपस्वी व ब्रह्मचारी निवास करते थे। सर्वत्र यज्ञ की सुगन्ध मिलती थी। स्पष्ट है कि ये जंगल निवासी गुणी जन प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ करते थे। सर्वत्र वेद मन्त्रों की पवित्र ध्वनि कानों में आती थी। ऐसे ही एक जंगल में एक विरहिणी महिला निवास करती थी जिसे शबरी के नाम से जाना जाता है तथा जो भील परिवार से थी।

एक बार महर्षि मतङ्ग के दर्शन करने से शबरी स्वयं को धन्य अनुभव करती थी। महर्षि के दर्शन से शबरी के मन में ऋषियों की सेवा की एक इच्छाशक्ति का उदय हुआ। उस युग में जातपात का झगड़ा न होते हुए भी शबरी के मन में शंका थी कि कहीं उसकी सेवा को ही कोई तपस्वी स्वीकार न करे तो उसका क्या हाल होगा? उसमें यह साहस न था कि वह किसी के पास जाकर इसके लिए स्वीकृति प्राप्त करती किन्तु वह सेवा के मार्ग की खोज में जुट गई। इसी बीच में शबरी के मन में एक बहुत ही उत्तम विचार आया। उसने एक योजना बनाई और निर्णय लिया कि मैंने विद्वानों की सेवा का व्रत अपने मन की शान्ति के लिए लिया है। इसलिए सेवा का प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं। सेवा वही है, जो प्रदर्शित न की जा सके। जिसका प्रदर्शन किया जावे, वह सेवा नहीं हो सकती।

अपने मन की योजना को क्रियान्वित करने के लिए शबरी गुप्त रूप से इस प्रकार सेवा करने की तैयारी में लग गई कि जिससे वह गुप्त रूप से कुछ ऐसे कार्य करे कि जिनके कारण वह मुनि जी की सेवा भी हो जाए और मुनि मतंग को इसका पता भी न चल सके।

कुछ लोग यह प्रश्न इस दृष्टि से देखते हैं कि शबरी नीच जाति की थी, इसलिए यह सोचकर कि कोई महान व्यक्ति उसकी सेवा स्वीकार ही न करेगा इसलिए उसने गुप्त सेवा की योजना बनाई। किन्तु यह सोच गलत है, कारण उस युग में जात–पात का भूत इस संसार में नहीं था। दूसरे शबरी शबर जाति की थी, जिसे भील कहते हैं। भली को कभी नीची जाति का नहीं माना गया। अतः वह नीच जाति से नहीं थी, जो कोई उस की सेवा को इन्कार करता। हां ! उसकी आयु के कारण तथा उसके नारी होने के कारण और इसके साथ ही उसके महान तपस्वी संन्यासिनी होने के कारण विद्वान लोग उससे सेवा नहीं लेना चाहते थे)।

हम इसे ही सत्य मानते हैं। शबरी ने अपने मन में गुप्त रूप से सेवा करने की योजना बनाई। ताकि उसके द्वारा किये जा रहे सेवाकार्यों का किसी को पता न चल सके, यह गुप्त ही रहे कि सेवादार कौन है? तथा यह भी कि उसको स्वयं को किसी पर एहसान दिखाने का भी मौका न मिले। उसके मन में यह विचार भी आया कि उसको स्वयं भी कभी किसी के सम्मुख अपना अभिमान प्रकट करने का अवसर न मिलेगा अर्थात् वह कभी अभिमानी नहीं हो सकेगी। इस नम्र भावना को सम्मुख रखते हुए उसने सेवा की जो योजना बनाई, उस योजना के अन्तर्गत उसने मतंग ऋषि के आश्रम से जंगल में बहुत दूर स्थित अपनी कुटिया को हटा कर ऋषि के आश्रम के बिल्कुल निकट ला कर बना लिया।

अब कुटिया में रहते हुए वह प्रातः बहुत जल्दी उठ कर इन विद्वानों की सेवा करने की योजना के अन्तर्गत ब्रह्म मुहूर्त से भी बहुत पहले उठकर जंगली कांटों से भरे रास्ते को साफ करके उस पर पानी से छिड़काव कर देती और जंगल से बहुत सी लकड़ियाँ लाकर आश्रम के निकट ही ढेर लगा देती ताकि जब ऋषि मतंग प्रातः भ्रमण व सन्ध्या वन्दन को निकलें तो मार्ग साफ़ सुथरा मिले तथा आश्रम में लौटने पर दिन भर के लिए लकड़ियाँ चुनने के लिए उन्हें जंगल न जाना पड़े।

अभी कुछ दिन ही ऐसा हुआ था कि ऋषि मतंग के मन में यह प्रश्न उठा कि यह कौन है जो प्रातः होने से पहले ही उठ कर मार्ग को साफ कर देता है तथा लकड़ियाँ लाकर आश्रम के सम्मुख रख देता है। इस प्रकार की सेवा करने वाला इस जंगल में यह कौन आ गया। वह किस भावना को लेकर यह सब कर रहा है। सत्य पता करने के लिए कुछ ब्रह्मचारियों को यह जिम्मेवारी सौंपी गई। ब्रह्मचारियों ने दिन रात का पहरा लगा कर देख लिया कि यह तो आश्रम के निकट रहने वाली शबरी ही कर रही है। शबरी को बुलाकर ऋषि मतंग जी ने पूछा कि वह यह सब गुप्त रूप से क्यों कर रही है तथा इस सबका उसका उद्देश्य क्या है?

शबरी ने बहुत ही विनीत भाव से कहा कि महर्षि मैं एक साधारण सी महिला हूँ, संन्यासिन हूँ। मेरे पास ऐसा कोई साधन नहीं कि जिसके द्वारा मैं आप की सेवा कर सकूँ, आपके आश्रम में रह कर सेवा की भी मुझे अनुमति नहीं है किन्तु तो भी मेरे मन में सेवा की एक भावना है। इस भावना को पूर्ण करने के लिए मैंने यह मार्ग चुना है। अतः आप मेरी भावना को देखते हुए मुझसे सेवा का यह अधिकार मत छीनें। इसके बिना मेरा जीवन दूभर हो जावेगा।

शबरी की बातों तथा उसकी अनुनय, विनय से भरपूर प्रार्थना को सुनकर ऋषि द्रवित हो उठे। उन्होंने कहा कि शबरी एक महान महिला है। वह एक सर्वस्व–त्यागी और सेवाभावी महिला होने के साथ ही साथ संन्यासी व महान तपस्विनी भी है। उसमें सेवा की अद्वितीय भावना है। उसकी महानता के सामने मैं तो नतमस्तक हूँ ही, इस जंगल में इन दिनों श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी सीता जी आये हुए हैं, अपने वनवास का समय वह इस समय यहीं पर ही काट रहे हैं। वह शीघ्र ही आकर तेरी गाथा को सुनेंगे तथा अपनी शुभकामनायें व आशीर्वाद तुझे देवेंगे।

शबरी ने ऋषि की बातों से अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हुए श्रीराम की प्रतीक्षा आरम्भ कर दी तथा उनकी सेवा सुश्रूषा के लिए जंगल से कंदमूल फल आदि लाकर अपनी कुटिया में जमा करने आरम्भ कर दिये। उसका यह नियम था कि जिस वृक्ष से भी वह फल लेती पहले उस वृक्ष के एक फल को चख लेती। यदि फल मीठा निकलता तो उस वृक्ष का फल लेती अन्यथा उसे छोड़कर दूसरे वृक्ष पर जा कर फल लेती। यहाँ यह तथ्य समझने आवश्यक है कि न तो भीलनी श्री राम के आने पर फल लेने गई तथा न ही अपने जूठे फल ही उन्हें खाने को दिये। बस वृक्ष का एक फल मात्र चखती थी, मीठा होने की स्थिति में वहां के फल लेती अन्यथा अन्य वृक्ष पर चली जाती।)

इस प्रकार से उसने बेर, कन्दमूल आदि भारी मात्रा में अपनी कुटिया में एकत्र कर लिये। शबरी राम जी की सेवा की तैयारी में जुटी हुई थी कि एक दिन उसके कानों में यह पड़ा कि आज श्री राम जी इधर आ रहे हैं, बस फिर क्या था, वह दर्शनों के लिए व्यग्र हो उठी तथा बार–बार द्वार पर आकर देखने लगी कि क्या श्री राम अभी तक आये या नहीं। श्री राम जो भीलनी की चर्चा सुन चुके थे उसकी इस व्यग्रता को दूर करते हुए, वे उसकी कुटिया के द्वार पर आ खड़े हुए।

श्री राम जी को अपने भाई व पत्नी सहित अपनी कुटिया के द्वार पर देख कर उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा। उसने श्री राम के चरण धोये (**यह सम्भव नहीं क्योंकि मर्यादाओं में बंधे श्री राम महिला और वह भी संन्यासिन से चरण कभी न धुला सकते थे**) हाँ! शबरी ने जो जल दिया उससे उन्होंने अपने चरण धोए तथा शबरी के दिये फल आदि तीनों ने बड़े चाव से खाये। इस समय तक जंगल में निवास करने वाले सब मुनिजन तथा ब्रह्मचारी भी वहाँ आ गये थे। फिर शबरी की प्रार्थना पर उन्होंने उसे उपदेश भी किया।

A 104,– शिप्रा अपार्टमेन्ट कौशाम्बी, गाजियाबाद (उ.प्र)

आर्य समाज एक अतुलनीय, विस्मयकारी, क्रान्तिकारी, वैज्ञानिक, राष्ट्ररक्षक संस्था

आर्य समाज ने हिन्दू समाज में पुनः नव जीवन फूंकने का उद्योग किया और हिन्दू जनता में आत्मविश्वास, राष्ट्रीय अभियान उत्पन्न किया। – Encyclopedia Britannica, P.558

आर्य समाज ने वर्तमान वैज्ञानिक आन्दोलन एवं वैदिक धर्म में एकता स्थापित करने के प्रयत्नों की खोज की। – Encyclopedia Americana, P.372

देश के राजनैतिक पुनरुज्जीवन के लिए जो आन्दोलन किये गये हैं, उनमें को भी आर्य समाज जैसा शक्तिशाली आन्दोलन नहीं है। – पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा (इण्डियन सोशियोलाजिस्ट पत्र, मई 1908)

आर्य समाज नैतिक मूल्यों, शान्तिवाद, शाकाहार और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य पर आश्रित समाज निर्माण का पृष्ठ पोषक है। – थियोसोफिकल न्यूज एण्ड नोटिस (लन्दन, जून 1955, स्मारिका पृ. 38)

आर्य समाज इस्लाम एवं ईसाइयत के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी विशेषकर इस्लाम के। यह आन्तरिक दृष्टि से धर्मयुद्ध करने वाला और सुधारक आन्दोलन था और साथ ही बाह्य आक्रमण से रक्षा करने वाला संगठन था। – जवाहर लाल नेहरू, (The Discovery of India' P. 290, The Signet Press, Culcutta)

आर्य समाज शिक्षित हिन्दू के समक्ष सर्वांगीण एवं व्यापक सिद्धान्तों का एक ऐसा दर्शन प्रस्तुत करता है, जो भारतीय परम्परा तथा शास्त्रों के अनुकूल है। उसके पास सामाजिक तथा शैक्षिक उन्नति की ऐसी योजनाएं भी हैं जिनके अभाव में वास्तविक प्रगति असंभव है। – दी पीपल्स ऑफ इण्डिया : (सर हर्बर्ट रिसेल)

(मार्तण्ड से साभार)

दो राष्ट्रों के सिद्धान्त व पाकिस्तान के बीज बोने वाले सर सैयद अहमद खान को महात्मा अटल जी के बराबर भारत–रत्न देने की मांग अराष्ट्रीय,हास्यास्पद और शर्मनाक

● हरिकृष्ण निगम

जब से भारतीय आधुनिक इतिहास को एक नया व निर्णायक मोड़ देने वाले महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी को भारत–रत्न पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय घोषित किया गया है, अलीगढ़, हैदराबाद व अन्यत्र कार्यरत कुछ मुस्लिम संगठनों व उनके विचारों को राजनीतिक प्रश्रय देने वाले कुछ नेताओं व समाचारपत्रों के एक वर्ग ने भी एक नई रट लगाना शुरू कर दिया है। अधूरी पटकथा में साम्प्रदायिक रंग भरने वालों को जैसे यह करना ही था–सर सैयद अहमद खान को भी भारतरत्न दिया जाना चाहिए।

यह मांग जितनी भी अराष्ट्रीय है उतनी ही भारत के इतिहास की एक सांघातिक विडम्बना भी जिसे देश विभाजन की त्रासदी भी कहा जा सकता है। इस मांग को दोहराने का अर्थ है यह स्वीकार करना कि महात्मा गांधी और मोहम्मद अली जिन्ना के राष्ट्रीय रंगमंच पर उभरने के बहुत पहले किस तरह उस समय के उत्तरप्रदेश, बिहार और मुम्बई के अनेक हिस्सों 1893 के इर्दगिर्द जब वायसराय लार्ड लैंड्सडाउन थे, सर सैयद जो गवर्नर जनरल की काउन्सिल के सदस्य थे और मुसलमानों की अलग पहचान की हर मुद्दे पर वकालत करते थे, देश विभाजन के बीज बो चुके थे। सर सैयद अहमद खान पहले मुस्लिम थे जिन्होंने खुलकर दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का समर्थन कर पहले 1 अक्टूबर 1906 में मुसलमानों की ओर से शिमला में वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड मिन्टो के समक्ष एक पेटीशन रखा था जिसमें अनेक नवाब, जागीरदार, ताल्लुकेदार, व्यवसायी, अधिवक्ता व जमीनदार शामिल थे। उसके पहले ही वे चौधरी रहमत अली, अमीर अली, सर आगा खान, हसरत मोहानी और रामपुर के नवाब व अनेक लीगी नेताओं का समर्थन पा चुके थे। उनका पूर्वी बंगाल और हैदराबाद में भी पूरा सहयोग मिला था क्योंकि शिक्षा व सुधार के बहाने उनका दूरगामी उद्देश्य एक इस्लामी राज्य स्थापित करना था। पहले 1937 की लेजिस्लेटिव एसेम्बली के निर्वाचन में मुस्लिम लीग को सशक्त बनाना और 40 के दशक के आते आते उन्होंने मुसलमानों के अलगाव का मजहबी उन्माद चरम सीमा पर ला दिया था।

यही भी आज सर्वाविदित है कि मुस्लिम लीग वस्तुतः अलीगढ़ के उस समय के प्रधानाचार्य **आर्ची बोल्ड** तथा वायसराय **लार्ड मिन्टो** के निजी सचिव **डनलप स्मिथ** की उपज थी जिनके संयुक्त प्रयास से सुनियोजित रूप से आगा खां के नेतृत्व में ऊपर वर्णित 1906 में उनका प्रतिनिधि मण्डल लार्ड मिन्टो से शिमला में मिला था। यद्यपि सर आगा खान को मुस्लिम लीग का स्थायी अध्यक्ष बनाया गया था पर 1913 में मतभेद होने पर वे लीग से अलग हो गए थे। फिर भी जिन्हा के अनुरोध पर दिसम्बर 1928 में फिर उन्हें अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का अध्यक्ष बनाया गया था। ब्रिटिश सरकार ने 1909 के सुधारों में लीग की मांगों को संरक्षण दिया पर तुर्की के प्रश्न पर उनके मतभेद हो गए थे। उसके बाद से अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति का मोहरा जिन्ना (1876–1948) को बनाया था। यह भी स्पष्ट हो गया था कि मिन्टो–मौरले सुधार जो 1909 में सामने आए थे उसी के साथ अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। यह भी साफ हो चुका था कि मुसलमानों के लिए अलग देश मांगने वालों में सर्वाधिक मुखर नेता उत्तर प्रदेश, बिहार और मुम्बई प्रेजीडेन्सी के लोग थे।

यदि हम मुड़कर देखें तो सर सैयद अहमद खान ने **1875 में अलीगढ़ में 'मोहेमडन ऐंग्लो–ओरियन्टल कालेज'** की स्थापना के तुरन्त बाद राजनीतिक गतिविधियाँ तेज कर दी थी। 1886 में आल इण्डिया मुस्लिम एजूकेशनल कान्फ्रेस की स्थापना के बाद 1906 में उत्तरप्रदेश से भारी संख्या में मुसलमानों को उन्होंने ढाका में आमंत्रित कर मुस्लिम लीग की स्थापना की थी। अलीगढ़ के मुसलमानों ने ही 1906 से लेकर 1910 तक इसके सेक्रेटरी के पद पर नियंत्रण रखा और उसके बाद से 1910 से लेकर 1926 तक इस पर लखनऊ के मुस्लिम नेताओं ने कब्जा रखा। सर सैयद के राजनीतिक उत्तराधिकारी मोहसिन–उल–मुल्क थे जिन्होंने लार्ड मिन्टो के समक्ष 1906 के प्रतिनिधिमण्डल ले जाने में असली सहायता दी थी। **लखनऊ के ही वजीर हुसेन के कारण ही 1916 का लखनऊ समझौता हुआ था जिसमें कांग्रेस पार्टी ने भावी संवैधानिक सुधारों और 1906 के सरकारी मेमोरेन्डम के मुद्दों को कार्यान्वित करने का आश्वासन दिया था। फ्रान्सिस राबिन्सन नामक लेखक के ग्रंथ–''सिपेरिटिज्म अमंग इण्डियन मुस्लिम्स : द प्राब्लेम्स ऑफ द यूनाइटेड प्राविन्सेज'' मुस्लिम्स–1860–1923** में उत्तर प्रदेश और बिहार के मुसलमान नेताओं को पाकिस्तान का वास्तविक निर्माता कहा गया है। यह एक भयावह त्रासदी थी कि वे स्वत्रंत भारत में नेहरू जी की छत्रछाया में सेकुलर राष्ट्रवादी मुस्लिम बनकर पनपते रहे।

यदि हम तत्कालीन अभिलेखों व समकालीन ब्रिटिश समाचारपत्रों जैसे 'स्टेट्समेन' या 'पायनियर' की सम्बद्ध कतरनों का अध्ययन करें तो पाते हैं कि लार्ड लिटन के समय में 1883–1884 के बीच वायसराय की लेजिस्लेटिव काउन्सिल में दो मुस्लिम सदस्य थे। उनके नाम थे, सैयद अहमद खान, सी. एस.के. और सर फैज़ अलीखान, के. सी.एस.आई.। पर लार्ड रियन ने यह संख्या घटा कर एक कर दी थी और देश की तीनों बड़ी प्रेसीडेन्सियों के मुस्लिम प्रतिनिधि के रूप में सिर्फ अमीर अली को नामित किया था। पर क्योंकि मुस्लिम समुदाय जिनकी संख्या उस समय ब्रिटिश भारत में 6 करोड़ आंकी गई थी उसके लिए महसूस किया जा रहा था कि सुप्रीम काउन्सिल में एक मुसलमान और लिया जाए। पहले इण्डियन नेशनल कांग्रेस में भी देश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों या प्रतिभाओं में गैर मुस्लिम नहीं थे पर जब 1885 में मुम्बई में इसका पहला अधिवेशन **डब्लू.सी. बौनर्जी** की अध्यक्षता में हुआ था इसके संस्थापक ए.ओ. ह्यूम ने **लार्ड डफरिन** के सुझाव पर एक प्रतिष्ठित मुसलमान को लेना पसन्द किया। प्रसिद्ध पारसी व्यवसायी दादा भाई नौरोजी पहले ही कांग्रेस से जुड़ गए थे और उन्होंने 1885 के अधिवेशन में तालियों की गड़गड़ाहट के बीच एक रोचक टिप्पणी के साथा घोषित किया था–**जो कदाचित मुगल उदार सम्राट अकबर भी नहीं कर सका था, वह लार्ड डफरिन के शासन में ए.ओ. ह्यूम ने कर दिखाया और पहले मुस्लिम शिक्षाविद बदरुद्दीन तैयब जी दिसम्बर 28, 1886 और उसके बाद के दिसम्बर 25, 1887 के ब्रिटिश समाचार पत्र इसकी विशद रिपोर्ट आज भी देखी जा सकती है।** अध्यक्ष ने कहा कि अब मुसलमानों को कांग्रेस से अलग व दूर रहने का कोई बहाना नहीं मिलेगा। साफ है यह तुष्टीकरण की कांग्रेस की नीति का ए.ओ. ह्यूम की पहली प्रेरणा सूत्र थी जो अब तक हिन्दू संगठनों व प्रतिभाओं के विरुद्ध चल रही है। यह एक कटु सत्य है कि देश के 1905 में हुए पूर्वी बंगाल के विभाजन, राजधानी कलकत्ते से दिल्ली स्थान्तरित करने, ढाका, चटगाँव और मैमनसिंह को लार्ड कर्ज़न और उस समय के ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ **स्टेट ब्रौडरिक** और वायसराय की ओर से ब्रिटिश सत्ता को ज्ञापन लिखने वाले **रिसले** का पूर्व बंगाल व असम में मुस्लिम शक्ति के विकास को बढावा, प्राथमिकता व महल देने के कारण देश का चित्र ही बदल दिया था। उस समय पूर्व में अंग्रेजों के बंगाल के विभाजन के पक्ष में सिर्फ बोगरा के सैयद हफीजुर रहमान, राजशाही और पबना के नवाब और उत्तर भारत में यूनाईटेड प्राविन्सेज़ व बिहार के तालुकेदार व नवाब आदि अंग्रेजों के समर्थन में लग गए थे। मुस्लिम रजवाड़ों व रियासतों के राजा व उनके परिवार के लोग ही मुस्लिम जनमत के प्रवक्ता बने थे जिसके लिए उन्हें पदवियों, सुविधाएं, प्रिवी पर्स, भत्ते, नाईटहुड और **''नाइट कमाण्डर आफ एम्पायर आफ इण्डिया'', ''खान साहिब'', ''आर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर'' जैसी पदवियाँ मिलती थीं।**

बाद में पश्चिम बंगाल की मुस्लिम लीग के अध्यक्ष जी.सी.ए. आरिफ, उपाध्यक्ष नवाब बहादुर सैयद अमीर हुसेन, सी. आई.ई., प्रिन्स मोहम्मद बख्तियार शाह, सी.आई.ई., प्रिन्स अफसारुल मलिक, नवाब नसीरुल मामलिक, खान बहादुर हाजी मौलवी अब्दुल जब्बार, सी.आई. ई. डा. ए. अतमामुन सुहरावर्दी आदि ने 1909 में बंगाल प्राविन्शियल मुस्लिम लीग के माध्यम से अंग्रेजों का साथ दिया था।

सर सैयद अहमद खान ने 1869 में ही मुस्लिमों की पहचान को उर्दू लिपि को सरकारी कार्यालयों व न्यायालयों में अपनाने के लिए गवर्नर जनरल पर दबाव डाल कर विवाद खड़ा कर दिया था। जब 1892 के इण्डियन काउन्सिल्स एक्ट के माध्यम से भारतीयों को कानून बनाने में भागीदारी देने का सरकार निर्णय ले रही थी, सर सैयद अहमद खान ने

शेष पृष्ठ 11 पर

पत्र/कविता

जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा लोग आर्य समाज की ओर आकर्षित होंगे

समय समय पर अपने शुभ सन्देशों के द्वारा लगातार वैदिक वाङ्मय पर लिखते रहने के लिए प्रेरित करते रहते हैं मैं इसे आपकी आर्य विद्वानों के प्रति सद्भावना मानता हूँ।

आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार के लिए वर्तमान काल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैसे जैसे विज्ञान का प्रचार प्रसार बढ़ेगा वैसे वैसे आर्य समाज की तरफ लोग–आकर्षित होंगे। अब आर्य समाज इसका कितना लाभ ले सकेगा यह आर्यसमाज के विद्वानों की क्रियाशीलता पर निर्भर रहेगा।गुरुकुलों का योग दान भी इसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण रहेगा। समाजों से तो कोई आशा करना व्यर्थ है। अधिकांश समाजों में भू माफिया लोग घुस आए हैं। अस्तु। आपको दीर्घ आयु दे और स्वस्थ रहें। इति

शिवनारायण उपाध्याय
73 शास्त्री नगर,
दादाबाड़ी कोटा (राज.)
दिनांक 3 अप्रैल 2015

****

उठो आर्यपुत्र

अहा! दयानंद तेरा बल
रूढ़ि रोगी कुंठित बने समाज में
था अंधकरा का फैला मल,
सुसंस्कारों से सूनी पड़ी
चला तेरा खंडन का हल।। 1 ।।

अंकुर फूटा तग एक नरम
बीत गया फिर बरस–बरस
बना तब वह सरस बट–वृक्ष
लहरा रहा है खूब आज
नमन तुझे हे आर्य समाज! ।। 2 ।।

आर्य?
धर्म नहीं, जाति नहीं, संप्रदाय नहीं
फिर?
मात्र श्रेष्ठता का है संस्कार,
सुन्दर करो वसुंधरा
यही है इसका दिव्य–विचार।। 3 ।।

उठो आर्यपुत्रो ! सँवारो
स्वार्थ मज्जित सूना है यह संसार,
बरसो बन जलधर प्रेम–ज्ञान के
कराओ प्यासी धरा को स्नान ।। 4 ।।

नूतन ज्ञान कराओ धारण
पुरातन का भी न हो अपमान
कोई नहीं है अन्य यहाँ
दो सबको समुचित सम्मान। ।। 5 ।।

ईशान महेश
बी– 324 प्रशांत विहार, रोहिणी, दिल्ली– 110085

सरदार पटेल से सबक लें

यह सर्वविदित है कि जम्मू कश्मीर में केन्द्र सरकार भाजपा को प्रथम बार पी.डी.पी. सरकार में उपमुख्य मंत्री का अवसर प्राप्त हुआ है। परन्तु पी.डी.पी. के मुख्य मंत्री राष्ट्रीय भावना की अवहेलना कर रहे हैं?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त लौह पुरुष सरदार पटेल ने देश में फैली पाँच सौ से ज्यादा रजवाड़ों और रियासतों को एक सूत्र में बाधने का प्रयास क्या था परन्तु हैदराबाद के निजाम ने उस प्रयास में बाधा डालने की कोशिश की। सरदार पटेल के दृढ़ निश्चय और अटूट देशभक्तिके कारण निजाम हैदराबाद को अन्त में घुटने टेकने पड़े। ठीक इसी प्रकार नरेन्द्र मोदी जी जम्मू–कश्मीर में अलगाववादी मनोवृत्ति को।निराश्रित करने हेतु सरदार पटेल की तरह दृढ़ संकल्प और धैर्य से कार्य करें। विजय अवश्य होगी। कश्मीर समस्या का समाधान अवश्य होगा।

कृष्णमोहन गोयल
113–बाजार कोट, अमरोहा

****

हिंदू-वक्ताओं पर लगाम ज़रूरी

सार्वजनिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे मुंबई के कैप्टन श्री देवरत्न आर्य जी का संस्मरण लगभग 15 वर्ष पूर्व सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपा था। जिसमें मुंबई के एक आर्य समाज ने पास के सटे एक चर्च से सशर्त–शास्त्रार्थ किया कि जो हारेगा वह खुद यहाँ से हट जायेगा। शास्त्रार्थ में चर्च हारकर जब हट गया तो वहाँ आर्यसमाज विस्तृत हो गया। उसके वार्षिकोत्सव पर कोलकाता से मदर टेरेसा भी आमंत्रित हुई। वहाँ पहुँचते ही टेरेसा की आखें भर आई। आर्यों के पूछने पर बोलीं– 'पहले तो ये चर्च ही था न? अच्छा होता इस आर्यसमाज का मुंहमांगा दाम लेकर चर्च को वापस कर देते!'

मेजबान आर्यों ने कहा– 'मदर, हमारा आर्य समाज बिकाऊ नहीं होता; इसे जुए में नहीं, शास्त्रार्थ से जीता गया है। पुनः शास्त्रार्थ करके जीतने और हारने को हम तैयार हैं। वैसे भी आप एक मानवीय विभूति के नाते यहाँ मुख्य अतिथि बन कर आयी हैं, न कि ईसाई नेता। अतः सुचर्चित इस चर्च के प्रसंग को चर्चाहीन ही रखकर हम आर्यों को विश्व–मानवोचित संदेश दें।'

इसी तरह लगभग 30–35 वर्ष पूर्व बलिया (उ.प्र.) की एक शोध छात्रा रजनीसिंह कोलकाता के टेरेसा आश्रम में कुछ दिन ठहरीं। ईसाई न बनने पर उसे नशीली दवा पिला देने की खबर छपी तो थी फिर दबा दी गयी।

अतः इस तरह की दबी हुई बातों को सत्य होते हुए भी उभारना सांप्रदायिक कहलायेगा, जिससे देश को विकास की ओर ले जा रहे मोदी का जादू कायम रहते भी भाजपा आगामी चुनावों में दिल्ली की तरह हार जायेगी। क्योंकि देश में अभी सांप्रदायिकयता की नहीं संपूर्ण विकास की जरूरत है। कल तक सहमे से रहे ये हिंदू नेतागण मोदी के आते ही बरसाती मेढ़कों–सा टरटरा कर मोदी के बाधक बन रहे हैं। इन पर अंकुश लगाना अनिवार्य है।

निंगा, आसनसोल
मो. 9735132360

****

पूर्व प्रधानमंत्री एवम् भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की महानता

सन् 1977 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी भारत के विदेश मंत्री बने। जब वे साउथ ब्लाक में अपने दफ्तर पहुंचे तब उनके साथ अफसरों की एक टोली थी। वाजपेयी जी ने इधर–उधर देखा, तो उन्हें दीवार पर एक खाली जगह दिखी। वह उस कक्ष को अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि विपक्ष सांसद की हैसियत से वह उस कक्ष में कई बार आ चुके थे। उन्होंने पूछा, 'पंडित जी कि तस्वीर कहां गई?' अफसरों ने कोई जबाव नहीं दिया, क्योंकि उन्होंने ही नेहरु जी कि तस्वीर वहां से हटा दी थी। उन्हें लग रहा था कि जिस व्यक्ति को इंदिरागांधी ने जेल में रखा था, वह नेहरु जी से भी नफरत करता होगा। वाजपेयी जी ने कहा, "वापिस लाओ वह तस्वीर", नेहरू जी 17 साल हमारे विदेश मंत्री रहे हैं और भारत के प्रथम प्रधान मंत्री अरसे से रहे हैं। नेहरु जी कि तस्वीर अपनी जगह पर पुनः लग गई।

मामचन्द रिवाड़िया
संस्थापक महामंत्री आर्य समाज
टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–27
मो. 09212003162

****

☞ पृष्ठ 09 का शेष

दो राष्ट्रों के सिद्धान्त व ...

1893 में **मोहम्मेडन एंग्लो–ओरेयन्टल डिफेन्स एसोसिएशन का अलीगढ़ में** गठन कर सरकार को ज्ञापन दिया कि उनके विशिष्ट विचारों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस संगठन ने मांग की कि उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्राविन्स, यूनाईटेड प्राविन्सेस लेजिस्लेटिव काउंसिल व बंगाल में उन्हें हिन्दुओं के बराबर ही प्रतिनिधित्व दिया जाए, उनके लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र हो, मुस्लिम सिर्फ मुसलमान प्रत्याशियों के लिए ही वोट दें और स्थानीय निकायों जैसे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड व म्यूनिसिपल काउंसिलों में मुसलमानों को जिन नगरों में भी 15 से 25 प्रतिशत आबादी हो आधे सदस्यों की संख्या मुस्लिम ही हो। वस्तुतः इन सभी मांगों के साथ सर आगा खान लार्ड मित्ते को शिमला मे पहली अक्टूबर, 1906 में एक ज्ञापन देने गए थे जिसमें सर सैयद अहमद खान भी शामिल थे। उसी के ठीक दो महीने बाद नवाब समीउल्ला की अध्यक्षता में आल इण्डिया मुस्लिम लीग की स्थापना ढाका में हुई थी जहां उत्तर भारतीयों, यू.पी. व बिहारियों का वर्चस्व था।

हाल में एक पाकिस्तानी प्रकाशन में आधिकारिक रूप से **सर सैयद अहमद खान (1817–1898) के भाषणों का मूलपाठ प्रकाशित हुआ है। इसमें सन् 1887 में उनके लखनऊ में दिए गए 28 सितम्बर, 1887 को दिए गए भाषण के अलावा अनेक वक्तव्य, आलेख एवं प्रस्तावों को प्रकाशित किया गया है जो** उनके हिन्दुओं व हिन्दुस्तान के प्रति घृणा का परिचायक रहा है। जिन्ना से भी अधिक विषाक्त शब्दावली का उनका प्रयोग हर भारतीय को चौंका सकता है। अपने अलीगढ़ आन्दोलन के दौरान उन्होंने 1887 में ही घोषणा की थी हिन्दू और मुस्लिम अलग–अलग कौमें हैं, वे साथ नहीं रह सकती हैं। यही बात सर मोहम्मद इकबाल ने 1930 में दोहराई और जस्टिस अमीर अली (1849–1928) ने कही। चौधरी रहमत अली (1897–1951) ने जब कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध **'नाउ ओर नेवर'** शीर्षक का 4 पृष्ठों का वक्तव्य बँटवाया था, वह विश्व के समाचारों में सुर्खियां बना था, सिवाय नेहरू उसे शुतुर्मुर्गी दृष्टि से अनदेखा कर रहे थे। आज भी बहुधा यह मांग मुगलिस्तान, हैदरिस्तान, बंगे–इस्लाम आदि भड़काऊ शीर्षकों से अलगाववादी उठाते रहते हैं।

लखनऊ में 28 सितम्बर, 1887 को सर सैयद अहमद खान ने यही भी कहा था कि भारत को दारुल–इस्लाम बनाना एक दैवी दायित्व है, हिन्दुस्थान के भीतर मुसलमान, स्वयं एक स्वतंत्र देश है जिसमें हिन्दू न तो शामिल हैं और न ही लिए जा सकते हैं। हिन्दू और मुसलमान मात्र दो विभिन्न धर्म ही नहीं, बिल्कुल अलग सामाजिक तंत्र हैं। इस्लाम को अरबी राष्ट्रीयता कह कर हिन्दू स्वयं अपने को नए खतरे में डाल रहे है। इस्लाम का खेमा ''**हिजबे अल्लाह**'' (**अल्लाह की पार्टी**) है। हिन्दुओं का खेमा ''**हिजबुल–शैतान**'' (**शैतान की पार्टियां**) में बंटा है। सर सैयद अहमद खान जो स्वयं अंग्रेजी सरकार के वेतनभोगी अधिकारी थे खुले आम अंग्रेजों की सहायताकर और मुस्लिम नवाबों व ताल्लुकेदारों को भी अंग्रेजों का साथ देने के लिए जीवन भर समझाते रहे थे। वे लखनऊ के उपर्युक्त भाषण में कहते हैं, क्योंकि वायसराय अपनी कानून बनाने वाली काउन्सिल मेरे जैसे व्यक्ति को सम्माननीय सदस्यता दे सकते हैं इससे स्पष्ट है कि मुझे **'डयूक' और अंग्रेज 'अर्लो'** की श्रेणी में रखते हैं और वे स्वयं भी श्रेष्ठ नस्ल के ईमानदार महारानी विक्टोरिया के प्रतिनिधि है। इस तरह की चाटुकारिता भरी बातों से लगभग 5000 शब्दों का उनका वक्तव्य हर उस भारतीय को पढ़ना वांछनीय है जिसने इस देश का नमक खाया है और किसी राष्ट्रद्रोही सर सैयद खान को भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने के लिए आवाज उठाता है। उपस्थित उत्तेजित व उनका उत्साह बढ़ाने के लिए तालियों की गड़गड़ाहट में सर सैयद अहमद का अंतिम विस बुझा बाण किसी भी भारतीय को आज भी बींध सकता है—**सामान्य रूप से किसी भी मुस्लिम को वायसराय की काउन्सिल में एक भी सीट नहीं मिल सकती थी जिसे मुझे योग्य मानकर गवर्नर–जनरल में मुझे दी है क्योंकि ''अब तक तो सारी की सारी काउन्सिल बाबू सो–एण्ड–सो चक्रवर्तियों से भरी रहती थी।''** लोगों की तालियों पर स्वयं सर सैयद अहमद इठलाते हुए खिलखिला रहे थे। पूर्व के बंगालियों व दक्किन के मराठों और बाकी हिन्दुओं का जिस तरह से उन्होंने मजाक उड़ाया था कि उनके पास न कोई राष्ट्र है न कोई अपना देश, उन्हें मुसलमानों के वर्चस्व के अन्दर 'धिम्मियों' की तरह रहना होगा। इन संदर्भों या मूलपाठ हर उस भारतीय को आज जानना जरूरी है जो आज भी सर सैयद अहमद खान को किसी मान सम्मान का योग्य मानता है। फ्रान्सिस राबिन्सन का उपर्युक्त ग्रंथ और तत्कालीन अंग्रेजी प्रेस की रिपोर्टें उनके झूठ का पर्दाफाश सहज में कर सकता है।

स्वयं पाकिस्तानी प्रकाशकों में प्रो. **आई. एच. कुरेशी** के चर्चित ग्रन्थ **''द मुस्लिम कम्यूनिटी ऑफ द इन्डो–पाकिस्तान सब–कान्टीनेन्ट''** सिर्फ इस बात को केन्द्र बिन्दु बनाता है कि सर सैयद अहमद खान पहले आधुनिक मुसलमान थे जिन्होंने प्रभावशाली रूप से दो–राष्ट्रों के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया था और उन्होंने ही सिद्ध किया था कि इण्डियन नेशनल कांग्रेस मुख्य रूप से हिन्दू संगठन था और यदि अलीगढ़ आन्दोलन न होता तो शायद खिलाफत आन्दोलन हो ही नहीं सकता था। इसी तरह **डा. अज़ीज अहमद** की प्रसिद्ध कृति **''स्टडीज़ इन इस्लामिक कल्चर इन द इण्डियन एन्वायरेनमेन्ट''** में यह भी विस्तार से लिखा गया है कि किस तरह सर सैयद अहमद खान ने गैर–मुस्लिमों के हाथ में बढ़ती ताकत से अकेले मुसलमानों को एक जुटकर उसे सफलतापूर्वक टक्कर ली। उपमहाद्वीप में उनकी प्रेरणा से दारुल–इस्लाम निर्मित करने की पहली बार पृष्ठभूमि बनी थी। इस परिप्रेक्ष्य में कहाँ महामना और अटल जी को दिया भारत रत्न का सम्मान और उसी को सर सैयद अहमद को देने की मांग कितनी भोंडी, हास्यास्पद और अराष्ट्रीय!

ए–1002, पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर, काचिवली (प),
मुम्बई–400067
मो. 9820215464

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में प्रेरणापर्व सम्पन्न

मुनी मुनीश्वरानन्द सरस्वती (प्रि. ज्ञानचन्द महाजन) की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में प्रेरणा एवं उत्साह भरी सादगी से सम्पन्न हुआ। मुख्य तिथि श्री एस.के. शर्मा महामंत्री [illegible] प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने [illegible]या कि मुनि मुनिश्वरानन्द सरस्वती का जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय व प्रेरणा देने वाला है। उन्होंने बताया कि उत्तर भारत में वैदिक साहित्य के पठन पाठन का अनुपम केन्द्र दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय है।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री. के.एल. खुराना प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी प्रधान आर्य युवा समाज ने शिरकत की। इस अवसर पर पूर्व सांसद श्री रामजी लाल आर्य का सामाजिक अभिनन्दन किया गया। पं. रामजी लाल का यह अभिनन्दन उनकी सादगी, सरलता और महत्वपूर्ण सामाजिक सेवाओं के लिए समर्पित किया गया। चौ. हरीसिंह सैनी पूर्व मन्त्री हरियाणा टाऊन ने सम्मानित अतिथि के रूप में समारोह को गौरवान्वित किया।

प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने श्री सत्यपाल आर्य, श्री रमेश कुमार लीखा, तथा सदस्य श्री प्रमोद लाम्बा एवं श्री अजय बतरा के महाविद्यालय के लिए सहयोग की प्रंशसा की।

इस अवसर पर नगर हिसार के गणमान्य प्रतिष्ठित आर्यजन भारी संख्या में उपस्थित थे। सेठ श्री रामकुमार रावलवासिया, देवेन्द्र उप्पल, अजय एलावादी, विनय मल्होत्रा, अवनीश आर्य, महात्मा अतर सिंह स्नेही, स्वामी माधवानन्द सरस्वती, आचार्य रामस्वरूप शास्त्री, संदीप आर्य भजनोपदेशक, श्रीमती शन्नो देवी ठकराल, राम कुमार आर्य, सत्यप्रकाश मित्तल आदि महानुभावों ने समारोह की शोभा बढ़ाई। हांसी, फतेहाबाद, रोहतक, भिवानी, जीन्द, सफींदो आदि स्थानों के आयोजन एवं प्रिंसिपल महानुभावों ने समारोह को गौरवान्वित किया।

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, (सासनी) हाथरस
स्थापित सन् 1909 पत्रालय-कन्या गुरुकुल, पिन-204104, जिला - हाथरस (उ.प्र.)

- कक्षा शिशु से कक्षा नवम् तक।
- विद्याविनोद प्रथमवर्ष (11), उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष (11)।
- विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा।
- विद्यालंकार/वेदालंकार प्रथमवर्ष, शास्त्री प्रथमवर्ष।
- आचार्य प्रथमवर्ष
- प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा।
- आई.टी.आई. (एन.सी.वी.टी.) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा 10 विज्ञान विषय सहित/इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण) एवं कटिंग (कक्षा 8 उतीर्ण) 1 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे।
- प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ–साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा।
- छात्रावास व्यवस्था।

रुपये 150.00 भेजकर नियमावली मंगायें
कन्या गुरुकुल अलीगढ़–आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।

मो.– 09458480781, 09627040999, 09258040119

डॉ. पवित्रा विद्यालंकार
मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 27-28/5/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. भटिण्डा ने हरिद्वार में लगाया वैदिक चेतना एवं व्यक्तित्व विकास शिविर

आर.बी.डी.ए.वी.सी.सै. पब्लिक स्कूल, भटिण्डा की 'आर्य युवा आर्ट क्लब' द्वारा मोहन आश्रम, हरिद्वार में शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में विद्यालय के 55 छात्र एवं श्री तीर्थराज शास्त्री, श्री सुखजिंदर कुमार, श्री मिथुन मंडल, श्री मुकेश कुमार और रविन्द्र कुमार [illegible] 5 अध्यापकों ने हिस्सा लिया।

बच्चों ने प्रातः कालीन सत्र में योगाभ्यास एवं सूर्य नमस्कार किया। तदुपरान्त सभी ने मिलकर स्वामी दयानन्द की ऐतिहासिक यज्ञशाला में वैदिक यज्ञ के माध्यम से ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

शिविर के दौरान छात्रों में वैदिक चेतना और व्यक्तित्व विकास के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिनमें से प्रमुख गतिविधियाँ हवन यज्ञ, आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा, फोटोग्राफी, ट्रैकिंग, श्रमदान, स्वच्छता अभियान और धार्मिक एवं दर्शनीय स्थलों की यात्रा आदि रहीं।

चर्चा सत्र में 'ईश्वर के अस्तित्व' एवं 'शिविर की उपयोगिता' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस सत्र में डी.ए.वी. गान के रचयिता श्री अजय ठाकुर जी विशेष अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को भाषण सम्बन्धी महत्वपूर्ण बिंदुओं का सहज एवं रोचकता से परिचय करवाया। उन्होंने सभी छात्रों को संभाषण के लिए प्रेरित किया।

छात्रों ने गंगा की सफाई के लिए दो जागरुकता रैलियाँ निकालीं। जिनमें बच्चों ने गंगा के महत्वपूर्ण स्थलों पर जाकर लोगों को गंगा को अपवित्र एवं प्रदूषित करने वाले कारणों और उससे उत्पन्न हो रहे खतरों से सावधान करने का प्रयास किया।

बी.एम.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, हरिद्वार के प्राचार्य श्री शरदकांत कपिल जी ने छात्रों को सम्बोधित किया।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़ में गायत्री महायज्ञ

डी.ए.वी.विद्यालय,सैक्टर–15ए, चण्डीगढ़ में प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। धर्माचार्य आचार्य रमेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व एवं अन्य स्थानीय धर्माचार्य–आचार्य दिनेश्वर शास्त्री, आचार्य रामप्रसाद शास्त्री एवं पं. उपेन्द्र कुमार जी– भजनोपदेशक के सहयोग से यह महायज्ञ विधिवत् सुसम्पन्न हुआ। प्राचार्या डॉ. श्रीमती राकेश सचदेवा जी एवं विद्यालय के चेयरमैन प्रि. रमेश चन्द्र जीवन जी सपत्नीक इस महायज्ञ के यजमान बने। कक्षा प्री–नर्सरी के बारहवीं तक के विद्यार्थीवर्ग एवं विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाओं ने इस महायज्ञ में सम्मिलित होकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की। इसके अतिरिक्त चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली एवं डेराबस्सी के डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्यगण, स्थानीय आर्य समाजों के प्रधान/मंत्री व आर्यजन इस महायज्ञ में सम्मिलित हुए व सभी ने इस कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं व विद्यार्थियों ने धन अन्य यज्ञार्थ आवश्यक–सामग्री का दान देकर इस महायज्ञ को सफल किया। विद्यालय के कान्ट्रेक्टर श्री पलविंदर सिंह विशेष रूप से धन्यवादी हैं।

पूर्णाहुति के पश्चात् चेयरमैन श्री रमेश चन्द्र जीवन जी ने वैदिक सैद्धान्तिक बातों की चर्चा करते हुए बहुत ही उदारभाव व प्रसन्नता के साथ सभी विद्यार्थियों व याज्ञिकजनों को साधुवाद किया। प्राचार्या डॉ. श्रीमती राकेश सचदेवा जी ने गायत्री यज्ञ में सम्मिलित सभी जनों का धन्यवाद यापन किया। पुनश्च शान्तिपाठ, प्रसाद वितरण एवं प्रीतिभोज के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल, अमृतसर में 18वें स्थापना दिवस पर हुआ विशेष कार्यक्रम का आयोजन

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर में दिनांक विद्यालय के 18वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन माननीय डॉ. वी.पी. लखनपाल कोषाध्यक्ष श्री जे.के. लथूरा, प्रबन्धक, डॉ. राजेश कुमार विशेष रूपसे उपस्थित हुए। विद्यालय की प्रिंसिपल अंजना गुप्ता अतिथिगणों, शिक्षकवर्ग एवं विद्यार्थियों द्वारा हवन की पवित्र अग्नि में आहुतियाँ अर्पित की गईं। इस अवसर पर मुख्य यजमान विद्यालय के प्रथम वर्ष (1998) में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों रनबीर बेरी एवं शीतल बेरी के अभिभावकों डा. वीर बेरी एवं श्रीमती शालनी बेरी को बनाया गया। ईश्वर से भी प्रार्थना की गई कि विद्यालय के सभी छात्र–छात्राएँ सदा सच्चाई, ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए जीवन में कर्मठ बनें एवं उन्नति करें। विद्यालय का, परिवार का और देश का नाम रोशन करें। विद्यालय अपने नाम की सार्थक करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करे। इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक जी एवं श्री दिनेश पथिक जी ने सुन्दर वैदिक भजन प्रस्तुत कर वातावरण को और भी आनंदमयी बना दिया।

विद्यालय के 18वें स्थापना दिवस पर विद्यालय की प्रगति में अपना अद्वितीय योगदान देने वाली महान विभूतियों एवं पत्रकारों की स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। सभी अतिथिगणों एवं विद्यार्थियों ने तदुपरांत ऋषि लंगर ग्रहण किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**